पूर्ण संख्या—४२

आयरलैण्ड देश

के

कुछ प्रसिद्ध लेख

१—स्थिति तथा विस्तार

२—समुद्रतट

३—खनिज सम्पत्ति

४—कला-कौशल

५—नगर

६—शासन विभाग

मार्च १९४३] **देश-दर्शन** [फाल्गुन १९९९

(पुस्तकाकार सचित्र मासिक)

वर्ष ४] **आयरलैण्ड** { संख्या ९ / पूर्ण संख्या ४३

सम्पादक

पं० रामनारायण मिश्र, बी० ए०

प्रकाशक

भूगोल कार्यालय, इलाहाबाद

Annual Subs. Rs. 4/-
Foreign Rs. 6/-
This copy As. -/6/-

वार्षिक मूल्य ४)
विदेश में ६)
इस प्रति का ।=)

विषय-सूची

विषय			पृष्ठ
१—स्थिति तथा विस्तार	...	...	१
२—भूरचना	...	...	३
३—नदियाँ	...	...	९
४—समुद्र-तट	...	...	१४
५—खनिज सम्पत्ति	...	...	१९
६—जलवायु	...	...	२२
७—कृषि और चरागाह	...	...	२४
८—कला-कौशल	...	...	२६
९—नगर	...	...	२९
१०—शासन-विभाग	...	...	३३
११—संक्षिप्त इतिहास	...	...	३६
१२—आयरलैण्ड की गुप्त संस्थायें...		...	५४
१३—आयरलैण्ड की एक लोकप्रिय कहानी ·		...	६२

स्थिति

स्थिति तथा विस्तार

आयरलैंड योरुप का सब से अधिक पश्चिमी द्वीप है। ग्रेट ब्रिटेन (जिसमें इंगलैंड, वेलस और स्काटलैंड शामिल है) इसके पूर्व में स्थित है। नार्थ चेनल आयरलैंड को स्काटलैंड से, आयरिश समुद्र इसे उत्तरी इंगलैंड से और सेंट जार्ज चेनल इसे वेलस से अलग करते हैं। नार्थ चेनल केवल १३ मील चौड़ा है। सेंट जार्ज चेनल अधिक चौड़ा (६६ मील) है। बीच वाले भाग में आयरिश सागर सब से अधिक (१३० मील) चौड़ा है। लेकिन ये समुद्र उथले हैं। जिससे सिद्ध होता है कि बहुत पुराने समय में आयरलैंड और ब्रिटेन दोनों ही योरुप महाद्वीप के प्रधान स्थल से जुड़े हुये थे। उथले समुद्र से अलग हो जाने पर भी आयरलैंड और योरुपीय महाद्वीप के बीच में बराबर आना जाना होता था। प्राचीन आर्यों का यह सब से अधिक पश्चिमी उपनिवेश था। आर्यों का देश होने के कारण ही शायद इसका नाम आयरलैंड (आर्यलैंड) पड़ा। कुछ लोगों का अनुमान है कि यह द्वीप बहुत हरा भरा है इसी से इसे इमराल्ड आइलैंड कहते हैं जिससे बिगड़ कर आयरलैंड नाम पड़ा। आयरलैंड के नामकरण का कारण कुछ भी हो। लेकिन इस द्वीप की स्थिति बहुत महत्वपूर्ण है। आयरलैंड द्वीप

पश्चिमी योरुप के उस भाग में स्थित है जो कारबार, और सभ्यता में बढ़ा चढ़ा है योरुप की व्यापारिक नदियों (एलब, राइन, सेन और ल्वायर) के मुहाने आयरलैण्ड से दूर नहीं हैं। अमरीका के लिये आयरलैंड योरुप के और देशों की अपेक्षा अधिक निकट है। यदि आयरलैंड के इतिहास और भूगर्भ रचना में गड़बड़ी न होती तो अमरीका का पता लगाने का श्रेय आयरलैण्ड को ही मिलता। ग्रेट ब्रिटेन तो आयरलैण्ड के द्वार पर ही स्थित है। आयरलैण्ड उन उत्तरी अक्षांशों (५१'२६ और ५५'५१) के बीच में बसा है जो विषुवत रेखा और उत्तरी ध्रुव के प्रायः मध्य में है। आयरलैण्ड की अधिक से अधिक लम्बाई प्रायः ३०० मील और चौड़ाई प्रायः २०० मील है। इसका क्षेत्रफल (३२,६०० वर्ग मील) है जो स्काटलैंड से कुछ बड़ा और इंगलैंड से कुछ कम है। लेकिन इसकी जन संख्या केवल ४० लाख है जो इंगलैंड और स्काटलैंड दोनों ही से कम है। लेकिन अब से १०० वर्ष पहले आयरलैंड की जन संख्या अब से दुगनी अधिक थी। इंगलैंड की जन संख्या तो इस बीच में बढ़ कर ढाई गुनी हो गई लेकिन अभागे आयरलैंड की जन संख्या घट कर आधे से भी कम रह गई। इस अन्तर के ऐतिहासिक कारण हैं।

सूचना

आयरलैंड के पर्वत अधिक ऊँचे नहीं है। कुछ पर्वतों की ऊँची चोटियां २००० फुट भी ऊँची नहीं हैं। सब से ऊँची चोटी भी २५०० फुट से अधिक ऊँची नहीं है। दक्षिण के पठार पर बसे हुये हमारे पूना और बेल्गांव नगरों की उँचाई आयरलैंड के सब से ऊँचे पहाड़ों से कुछ अधिक है। अधिकतर पहाड़ समुद्र तट के पास हैं। इन पहाड़ों में बीच बीच में नदियों के चौड़े मुहाने हैं। इससे पहाड़ भीतरी भागों में पहुँचने के लिये कोई बाधा नहीं डालते हैं। इन पहाड़ों से घिरा हुआ आयरलैंड का सब से बड़ा भाग है जिसे मध्यवर्ती मैदान कहते हैं। इगलैंड इतना बड़ा मैदान नहीं है। आयरलैंड का यह मैदान पूर्वी किनारे से पश्चिमी किनारे तक (डोनेगल और गाल्वे) की खाड़ियों तक फैला हुआ है। यह मध्यवर्ती मैदान उत्तर, पश्चिम और दक्षिण-पूर्व में चार प्रदेशों से घिरा हुआ है जो कुछ कुछ पहाड़ी है। इस प्रकार आयरलैंड का आकार एक ऐसी थाली के समान है जिसके किनारे कई जगह पर टूट गये हों।

मध्यवर्ती मैदान—यह ब्रिटिश द्वीप समूह का सब से बड़ा मैदान है और समस्त आयरलैंड $\frac{1}{3}$ का है। इस

मैदान की औसत चौड़ाई ५० मील है। पूर्व से पश्चिम की ओर यह १०० मील तक फैला हुआ है। यह मैदान उत्तरी पहाड़ियों को दक्षिणी पहाड़ियों से अलग करता है। इस मैदान के पश्चिम की ओर कोनामारा की जंगली पहाड़ियां हैं। आयरलैंड का सभी धरातल प्राचीन समय में हिमागारी के असर से बदल चुका है। निचले मैदान में हिमागारों के किनारों पर कंकड़ पत्थर के जो मोरेन इकट्ठे हो गये थे उनके टीले इस समय भी बचे हुये हैं। चपटी भूमि पर पानी के बहने में वैसे ही देर लगती है। इन टीलों ने बहाव में और भी अधिक बाधा डाल दी है। मैदान में कहीं चिकनी मिट्टी बिछी हुई है। कहीं चूने की चट्टानें हैं। यहां प्रबल वर्षा होती है। बीच में भीगी ज़मीन होने से जगह जगह पर दलदल और झीलें हो गई हैं। कुछ दलदल बहुत गहरे हैं। कुछ ऊपर से कड़ी मिट्टी की तहों से घिरे हैं। लेकिन उनके नीचे काफी पानी है। जिन उथली झीलों की तली में मोटी चिकनी मिट्टी की तह होने के कारण पानी नीचे नहीं भिद पाता है उनके बँधे पानी में नरकुल, सिवार और दूसरी घासें शीघ्र ही उग आती हैं। काफी समय बीतने

पर यह बनस्पति सड़ जाती है और दब जाती है। कहीं कहीं इस तरह दबी हुई सड़ी बनस्पति की तह ५० फुट मोटी होती है। जिनके तह पतली होती हैं उन्हें सुखा कर उनमें खेती कर ली जाती है। मोटी तहों से बाग (या दलदल वाले) तालाब, बन जाते हैं, इनका रंग कुछ लाल या गहरा भूरा होता है। कुछ तालाब ऊपर से हरे दिखाई देते हैं लेकिन इनमें नीचे सड़ी हुई बनस्पति रहती है। वास्तव में कीचड़ मिश्रित इसी सड़ी हुई बनस्पति को बाग या दलदल कहते हैं। गहरे दलदलों को पशु और मनुष्य सभी बचाते हैं। इन पर कोई चल नहीं सकता न इन पर कोई उपज होती है। आयरलैंड का सब से बड़ा दलदल (बाग) बाग आफ़ एलन कहलाता है। यह मध्यवर्ती मैदान के दक्षिण-पूर्व में स्थित है। सड़कों और रेल मार्गों को अधिक ऊपर से जाना पड़ता है। इस ओर बहने वाली नदियां बड़ी मन्द गति से बहती हैं। इनका हाल तुम आगे पढ़ोगे।

आयरलैंड के पर्वत समुद्र तट के पास फैले हुये हैं। आण्ट्रिम पर्वत फेअर हेड के टीलों के पास आरम्भ होते हैं और बेलफास्ट लाग तक फैले हुये यहां से वे दक्षिण

पश्चिम की ओर बढ़ते हैं और अन्त में वे बान नदी के प्रवाह प्रदेश के मैदान में मिल जाते हैं। इनकी सब से ऊंची चोटी ट्रोस्टन है जो १८०० फुट ऊंची है। इस ओर अति प्राचीन काल में एक विकराल ज्वालामुखी पर्वत ने इतना लावा उगला कि लावा की मोटी तहों ने आण्ट्रिम पर्वत को ढक लिया। लावा की इन्हीं कड़ी तहों ने आण्ट्रिम पर्वत को घिस कर नष्ट होने से बचाया है। उसी समय के लावा के ठंडे होने से जायन्ट्स काज़वे (दानव सेतु) बना है। इस पर्वत के दक्षिणी भाग में बेल्फास्ट से मायरा तक चूने के पत्थर की जो शिलायें ज्वालामुखी के लावा द्वारा अब तक सुरक्षित रहीं उन्हें आजकल काट कर लोग घर बनाने के लिये ले जाते हैं। इन शिलाओं के बीच बीच में लावा की वे नालियां दिखाई देती हैं जिनमें होकर वह पृथिवी के वक्षस्थल से ऊपर उमड़ आया था।

बेलफास्ट लाग के दक्षिण में जो पहाड़ियां हैं उनकी उत्पत्ति पानी से हुई। वे मोर्न माउंटेन को जोड़ने में एक कड़ी के समान हैं। मोर्नमाउंटेन डाउन काउण्टी के दक्षिण-पूर्वी कोने पर स्थित है। मोर्नमाउंटेन दानेदार

पत्थर की चोटियों का एक समूह है। इनकी सब से ऊंची चोटी २७८६ फुट ऊंची है। इसके दक्षिण में कालिंगफर्ड बे की एस्चुअरी (एक मुहाना) है। कालिंग फर्ड बे और डब्लिन के बीच में भूमि नीची है और मध्यवर्ती मैदान का अंग है।

डब्लिन बे के दक्षिण में विकलो पर्वत है। इसकी सब से ऊंची चोटी ३०३९ फुट ऊंची है। इन पर्वतों की घाटियां बड़ी सुन्दर और ऐतिहासिक महत्व की हैं। विकलो के दक्षिण में माउंट लेन्स्टर या ब्लैक स्टेर्स श्रेणी है। इसकी उँचाई २६१० फुट है। अधिक पश्चिम में पहाड़ियों की दिशा उत्तर-दक्षिण को गई है। यह ऊंची भूमि बेरो और नोर नदियों के बीच का कोण घेरे हुये है।

आयरलैंड के दक्षिण में पर्वतों का दिशा पूर्व से पश्चिम को हो गई है। इनकी उत्पत्ति भिन्न भिन्न समय में हुई है। स्लीवेनामैन की उँचाई २३४० फुट है। आगे चल कर पहाड़ कुछ उत्तर की ओर हो गये हैं। नागल्स और बोकराग पर्वतों के बीच में एक विलक्षण द्वार है। इसे प्राचीन समय में एक नदी ने काट कर

बनाया था जो स्वयं विलीन हो गई। माल्लो से कार्क शहर को आने वाली रेलवे लाइन ने इसी मार्ग का अनुसरण किया है। केरो पर्वतों की श्रेणियां कुछ समानान्तर सी हैं। यहां रूपान्तरित (मेटा मार्फिक) शिलायें हैं जो आरम्भ में जलीय थीं। फिर वे समय पाकर कड़ी हो गईं। यहीं स्लेट, पुराना लाल बलुआ पत्थर और चूने का पत्थर मिलता है। यह समस्त प्रदेश बड़ा सुन्दर है।

पश्चिम में केरी से मेयो तक आयरलैंड का किनारा बहुत ऊंचा है। केवल शेनन, गाल्वे और क्लू में पहाड़ तो नहीं हैं लेकिन वे विशाल टीले हैं। गाल्वे और क्लू के बीच में कोनेमारा का प्रायद्वीप है। आक्स माउंटेन मेयो के पर्वतों को डोनेगल के पर्वतों से जोड़ता है। इस ओर एरीगाल चोटी २४६६ फुट ऊंची है।

तटीय पर्वतों के अतिरिक्त मैदान में भी एक दो पहाड़ियां हैं। इनकी अधिक से अधिक उंचाई १७३३ फुट है।
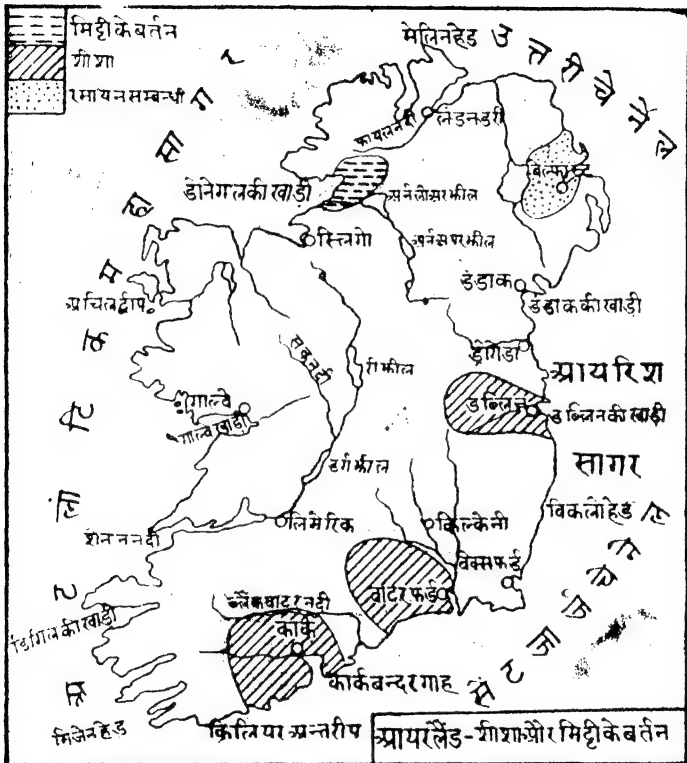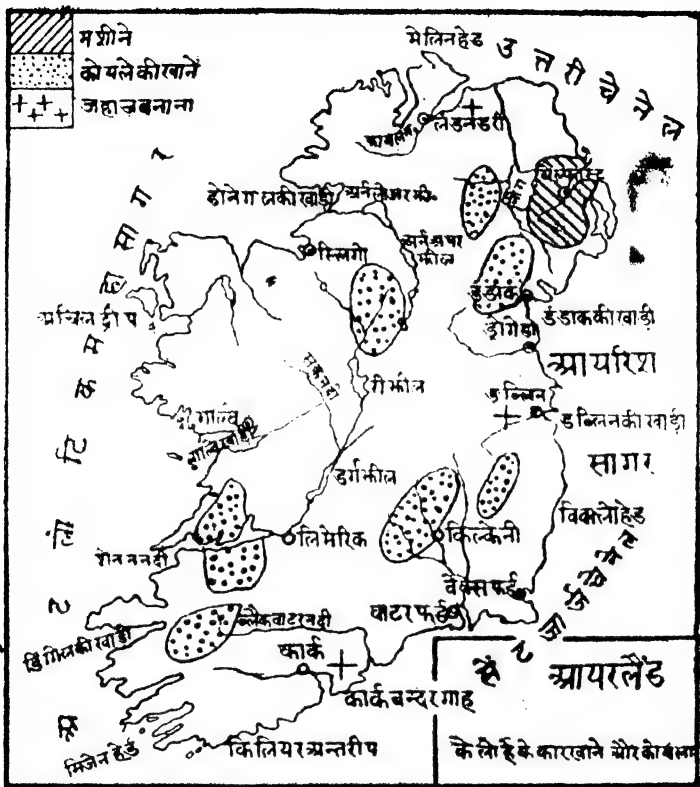
आयरलैंड-दर्शन

नदियां

शेनन न केवल आयरलैण्ड वरन् ब्रिटिश द्वीपसमूह की सब से बड़ी नदी है। यह उत्तरी पर्वतों से निकलती है। इसका निकास समुद्र से केवल २० मील दूर है। लेकिन यह नदी भीतर की ओर बहती है। शेनन नदी २२५ मील लम्बी है। इसका प्रवाह प्रदेश ७००० वर्ग मील है। इस प्रवाह प्रदेश में मैदान के सभी विशेष अंग आ जाते हैं। कहीं चूने के पत्थर के आखातों में लम्बी-चौड़ी, उथली और वनस्पति से रुँधी हुई उथली झीलें हैं। कहीं टेढ़ी चाल से चलने वाली मन्द वाहिनी छोटी छोटी नदियां हैं।

कुली काग पर्वत से निकल कर पहले शेनन नदी ११ मील पश्चिम की ओर बहती है और चौड़ी होकर लागएलन में मिल जाती है। लागएलन १४ वर्गमील है। लागएलन समुद्र तल से केवल १६८ फुट ऊँचा है। अपना इलाहाबाद शहर इससे प्रायः दुगुनी उँचाई पर स्थित है। लागएलन से २१४ की समस्त दूरी तक (मुहाने के पास तक) शेनन नदी में नावें चल सकती

हैं। लागएलन छोड़ने के बाद शेनन नदी दक्षिण की ओर मुड़ती है और लाग बांडर्ग के बाद लागरी (४१ वर्ग मील) में पहुँच जाती है। अन्त में यह लाग डर्ग में पहुँचती है जो सब से अधिक बड़ा (४६ वर्ग मील) है। लाग डर्ग समुद्र-तल से १०८ फुट ऊँचा है। इस प्रकार शेनन नदी यहां तक अपने ८० मील लम्बे मार्ग में अपने स्रोत से केवल ६० फुट नीचे उतरती है। हिमालय से निकलने वाली नदियां इतने ही मार्ग में कई हज़ार फुट नीचे उतर आती हैं। लाग डर्ग के आगे शेनन नदी तंग नदी कन्दराओं में होकर बहती है। सिल्वर माइन्स के टीले इसके बायें किनारे पर और स्लीवर्नाग इसके दाहिने किनारे पर स्थित हैं। इस मार्ग में शेनन नदी अधिक वेग से बहती है। लिमेरिक नगर के पास नदी दक्षिण-पश्चिम की ओर मुड़ती है। यहां से समुद्र केवल २० मील दूर है। अन्त में एक विशाल एस्चुअरी बनाकर शेनन नदी समुद्र में प्रवेश करती है। साधारण जहाज़ मुहाने से लिमेरिक शहर तक चले आते हैं। इस से शहर के व्यापार को बड़ा लाभ होता है। कभी कभी उच्च ज्वार में शेनन के मुहाने से ऊँची

जलोर्मि (बोर) भी आ जाती है। इससे नदी तट पर बने हुये घरों की दीवारों को बड़ी हानि होती है। शेनन में कई सहायक नदियां मिलती हैं। दांये किनारे पर इसमें केरिक नगर के पास बायल नदी मिलती है। बायल नदी लाग गारा और कई छोटी-छोटी झीलों का पानी बहा लाती है। सक नदी बनागर से कुछ मील उत्तर की ओर शेनन में मिलती है। फरगस नदी मुहाने के पास मिलती है। बायें किनारे पर इनी नदी लाग शोलिन से निकल कर शेनन में मिलती है। ब्रोस्ना नदी ओवेल और एनल का पानी लाकर शेनन में गिराती है।

कोरिब नदी लाग कोरिब के दक्षिणी सिरे से निकल कर गाल्वे की खाड़ी में गिरती है। इसका प्रवाह प्रदेश ११६० वर्ग मील है।

म्वाय नदी आक्स पर्वत के पूर्वी ढाल से निकलती है। इसका प्रवाह प्रदेश ८०० वर्ग मील है।

अर्न नदी लाग गौना से निकलती है और कुछ दूर बहने के बाद फैलकर लाग आउटर में मिल जाती है। यह नदी डोनेगल की खाड़ी में गिरती है।

अल्स्टर नहर द्वारा यह नदी अल्स्टर ब्लैक वाटर से मिली हुई है। एक नहर द्वारा यह शेनन नदी से मिला दी गई है। अर्न नदी का प्रवाह प्रदेश १५५० वर्ग मील है।

फायल नदी टायरोन की पहाड़ियों से निकलती है और उत्तर की ओर बह कर लाग फायल में गिरती है। फिन, मोर्न और डर्ग इसकी सहायक नदियां है। फायल नदी के मुहाने के पास लण्डनडरी का कारबारी शहर स्थित है। इस नदी का प्रवाह प्रदेश ११०० वर्ग मील है।

बान नदी निचले मैदान की नदी है। इसका प्रवाह प्रदेश २३४५ वर्ग मील है। इस मैदान के मध्यवर्ती आखात में लाग नीग स्थित है। लाग नीग के पास आयरलैण्ड के कई जल मार्ग मिलते हैं। पर निचला प्रदेश होने के कारण बाढ़ के दिनों में बहुत सी ज़मीन पानी में डूब जाती है। लागन नदी स्लीव क्रूब से निकलती है। पश्चिम, उत्तर और अन्त में उत्तर पूर्व की ओर बह कर बेल्फास्ट के पास होकर समुद्र में गिरती है। यह नदी केवल ४० मील लम्बी है। फिर भी

आयरलैंड की यह एक महत्वपूर्ण नदी है। इसके अधिकतर मार्ग में नावें चल सकती हैं।

न्यूरी भी एक छोटी नदी है। यह कार्लिंगफर्ड की खाड़ी में गिरती है। न्यूरी शहर इसी के मुहाने पर स्थित है। न्यूरी नहरों द्वारा दूसरे जल मार्गों से मिला दी गई है।

बायन नदी मध्यवर्ती मैदान के दलदली प्रदेश से निकलती है। यह मन्दवाहिनी नदी ८० मील बहने के बाद समुद्र में गिरती है। २० मील तक इसमें नावें चलती हैं। नावान और ट्रिम नगर इसके किनारे स्थित हैं। इसकी महत्वपूर्ण सहायक नदी ब्लैक वाटर है। इसके किनारे केल्स नगर स्थित है।

लिफी नदी विकलो पर्वत के पश्चिमी ढालों से निकल कर डब्लिन की खाड़ी में गिरती है। न्यूब्रिज और केलिब्रन इसके किनारे पर बसे हुये दूसरे नगर हैं। यह नदी ५० मील लम्बी है और नहर द्वारा शेनन नदी से मिला दी गई है। विकलो पर्वत से निकलने वाली नदियां संसार भर में अपनी प्राकृतिक सुन्दरता के लिये प्रसिद्ध हैं। इन्हें देखने के लिये दूर दूर से यात्री आते

हैं। आयरलैंड के राष्ट्रीय कवियों ने इन पर सुन्दर कवितायें लिखी हैं। वाट्री, ओवोका और स्लैनो इनमें प्रधान हैं।

बारो, नोर और सुइर नदियां भी इसी प्रदेश से निकलती हैं और भिन्न भिन्न मार्गों से बहने के बाद वाटर फर्ड बन्दरगाह के पास आपस में मिल जाती हैं। सुइर नदी इनमें सबसे अधिक (११४ मील लम्बी) है।

ब्लैक वाटर, ली, और बैण्डन नदियां केरी पर्वत से निकलती हैं। ठीक पूर्व की ओर कार्क काउण्टी में बहने के बाद समुद्र में गिरती हैं।

समुद्र-तट

आयरलैंड का तट बहुत कटा फटा है। समस्त समुद्र-तट २००० मील लम्बा है। ३२,६०० वर्ग मील क्षेत्रफल के लिये २००० मील का तट सचमुच बहुत अधिक है। अफ्रीका का क्षेत्रफल १,१२,००,०० वर्ग मील है। लेकिन वहां का समुद्र-तट केवल १६००० मील है। इस प्रकार आयरलैंड में प्रति १६ वर्ग मील

के पीछे १ मील समुद्र-तट है लेकिन अफ्रीका में प्रति ६०५ वर्ग मील के लिये १ मील समुद्र-तट है। आयरलैंड में तट लम्बा होने के कारण कोई भी स्थान समुद्र से ५० मील से अधिक दूर नहीं है। फिर भी आयरलैंड का समस्त तट एक समान कटा फटा नहीं है।

आयरलैंड का पूर्वी तट अटलांटिक महासागर की तूफानी लहरों से सुरक्षित है। इसी से यह बहुत कम कटा फटा है। विकलो हेड आदि एक दो स्थानों को छोड़ कर समस्त पूर्वी तट रेतीला है। इस ओर जहां समुद्र कुछ कटा भी है वहां पानी उथला है। डब्लिन बे (खाड़ी) इतनी उथली है कि यहां खाड़ी के सिरे पर जहाज़ों के लिये किंग्स्टन में कृत्रिम बन्दरगाह बनाना पड़ा। अधिकतर जहाज़ यहीं अपना सामान उतारते हैं।

डंडाकबे, डण्ड्रम बे, कार्लिंगफर्ड लाग और स्ट्रैंगफर्ड लाग, सभी उथले और रेतीले हैं। लेकिन उत्तर में बेलफास्ट लाग और दक्षिण में वेक्सफर्ड हेविन वास्तव में अच्छे बन्दरगाह और व्यापारिक केन्द्र हैं। (आयरलैंड में लाग (Lough) समुद्री कटान को कहते हैं)

डब्लिन से दक्षिण की ओर बढ़ने पर समस्त

दक्षिणी तट कड़ी चट्टानों वाला और अधिक कटा फटा मिलता हैं। गहरी खाड़ियों के ऊपर ऊँचे टीले खड़े हुये हैं। वाटर फर्ड हेविन को घेरने वाली पहाड़ियां इसे तूफानों से सुरक्षित रखती हैं। लेकिन बन्दरगाह के भीतर जहाजों को घुसने में कुछ कठिनाई होती है। फिर भी यहां जहाज़ बराबर आते जाते रहते हैं। कार्क बन्दरगाह बड़ा सुन्दर और सुरक्षित है। यह इतना बड़ा है कि ब्रिटिश बेड़े के सब जहाज यहां शरण ले सकते हैं। किन्सेल बन्दरगाह कुछ पश्चिम की ओर है। क्लियर द्वीप का क्लियर अन्तरीप आयरलैंड का सब से अधिक दक्षिणी सिरा है।

आयरलैंड का पश्चिमी तट पथरीला है। लेकिन इस ओर अटलांटिक महासागर की तूफानी लहरें लगातार तट से टकराती रहती हैं। इससे स्थल के मुलायम कण कट कर पानी के साथ बह जाते हैं और समुद्र स्थल के भीतर घुसता चला आता है। कड़ी चट्टानों के कुछ टीले स्थल से मिले रहते हैं कुछ छोटे छोटे द्वीप बन जाते हैं। आयरलैंड के पश्चिमी तट के कुछ भाग नार्वे के फियर्ड तट के समान हो गये हैं। एक द्वीप में स्थित

आयरलैंड-दर्शन

डनमोर अन्तरीप आयरलैंड का सबसे अधिक पश्चिमी सिरा है। शेनन नदी के मुहाने पर चट्टानों का समूह एक दम पानी के ऊपर उठा हुआ है। इसे लून हेड कहते हैं। अधिक उत्तर की ओर अचिल हेड अन्तरीप २००० फुट पानी के ऊपर उठी हुई है।

आयरलैंड के पश्चिमी तट पर बहुत से सुन्दर और प्राकृतिक बन्दरगाह हैं। लेकिन यह तट योरुप के बाज़ारों से दूर था। इस लिये इधर व्यापारी बन्दरगाहों का विकास न हो सका। तट के पास पहाड़ स्थित होने के कारण भीतरी भागों तक पहुँचने और भीतरी व्यापार के बढ़ने में भी बाधा पड़ती है। बेण्ट्री बे, केनोर बे और डिंगिल बे इतने बड़े हैं कि यहां बड़े से बड़े समुद्री जहाज़ आ सकते हैं। लेकिन इस समय इन बन्दरगाहों का कुछ भी मूल्य नहीं है। इन बन्दरगाहों के उत्तर में शेनन नदी की एस्चुअरी है मुहाने से लगभग ५० मील की दूरी पर लिमेरिक का कारबारी शहर और व्यापारी बन्दरगाह स्थित है।

गाल्वे बे, क्लूबे और स्लिगो बे मछलियों के पकड़ने के केन्द्र हैं। इनके आगे डोनेगल को पीछे छोड़ने पर

मालिन हेड अन्तरीप दिखाई देने लगता है। यहीं आयरलैंड का सबसे अधिक उत्तरी सिरा है।

लाग स्विली भीतर की ओर समुद्री सिरे पर स्थित होने पर भी व्यापार के काम का नहीं है। लेकिन लाग फायल सुन्दर बन्दरगाह है। लाग फायल और ग्लासगो तथा स्काटलैंड के दूसरे बदरगाहों से बहुत व्यापार होता है।

कोलेरिन से १० मील आगे तट का दृश्य बड़ा आश्चर्य जनक है। यहीं जायन्ट्स काज़वे (दानवसेतु) है। यह एक ऊँची उठी हुई सड़क के समान है। कहा जाता है कि पुराने समय में आयरलैंड के दानवों ने आयरलैंड से स्काटलैंड तक समुद्र से ऊपर शिलाओं का पुल बनाने का निश्चय किया। यह उसी के भग्नावशेष हैं। वास्तव में काज़वे चट्टानों के अलग-अलग खम्भे हैं। वे समुद्र तल से एकदम सीधे खड़े हैं। अधिकतर खम्भे अष्टभुजाकार हैं कुछ नवभुजाकार हैं। कुछ पंच भुजाकार हैं। लेकिन वे एक दूसरे से ठीक सटे हुये हैं और उनका ऊपरी भाग पानी को छूता है और समतल है। आयरलैंड के उत्तरी-पूर्वी सिरे पर

फेअर अन्तरीप के पास जो खम्भे हैं वे पानी के ऊपर २०० फुट उठे हुये हैं।

खनिज-सम्पत्ति

आयरलैण्ड की खनिज-सम्पत्ति अधिक नहीं है। कुछ खनिज पदार्थ इतनी कम मात्रा में पाये जाते हैं और इनके निकालने के लिये इतने अधिक प्रारम्भिक धन की आवश्यकता थी कि आयरलैण्ड जैसे निर्धन देश ने उन्हें न निकालना ही उचित समझा। फिर भी आयरलैंड में कई प्रकार के खनिज पदार्थ पाये जाते हैं।

कोयला—आण्ट्रिम के उत्तर में बेलीकासेल और मुर्लागवे के बीच में कोयले का क्षेत्र है। यहां से कई बार बहुत सा कोयला निकाला गया लेकिन इसके निकालने में कोई विशेष लाभ नहीं हुआ है। जायण्ट्स काज़वे के पास लिग्नाइट (कोयला) पाया जाता है। डंगेनान और कोलआइलैंड में भी कोयला पाया जाता है। शेनन के प्रवाह प्रदेश में लिमेरिक और क्लेर में भी कोयले की खानें हैं। कार्लो, किलकेनी आदि दक्षिणी ज़िलों में एन्थ्रेसाइट कोयला पाया जाता है। औसत

से समस्त आयरलैंड में प्रतिवर्ष १ लाख टन कोयला निकाला जाता है। कोयले को निकालने में सब से बड़ी बाधा निर्धनता है। कोयले की कमी से बड़े बड़े कारखानों का आरम्भ न हो सका। इस समय जिन कारखानों को अधिक कोयले को आवश्यकता पड़ती है। वे पूर्वी तट के पास स्थापित किये गये हैं जिससे वहां इंगलैंड और स्काटलैंड से कोयला सुगमता से आ सके।

लोहा—आण्ट्रिम प्रदेश में काफी अच्छा लाल रंग का कच्चा लोहा पाया जाता है। कुछ भूरे रंग का लोहा आयरलैंड के दलदलों (बाग) में पाया जाता है। आयरलैंड का अधिकतर लोहा साफ होने के लिये स्काटलैंड को भेज दिया जाता है।

केरी प्रदेश में तांबा, विकलो पर्वत पर जस्त (ज़िंक) और टिन, सोना मैंगनीज़, चांदी और कुछ सुरमा पाया जाता है। गाल्वे में सीसा पाया जाता है। गंधक गोर्टमोर (गाल्वे) और विकलो में पाया जाता है। पहाड़ी नमक पुराने समय की नमकीन झीलों ने बनाया है। वह कोरिकफर्गस के पास पाया जाता है।

चूने का पत्थर आयरलैण्ड के अधिकतर धरातल

भूगर्भ सम्बन्धी - आयरलैंड
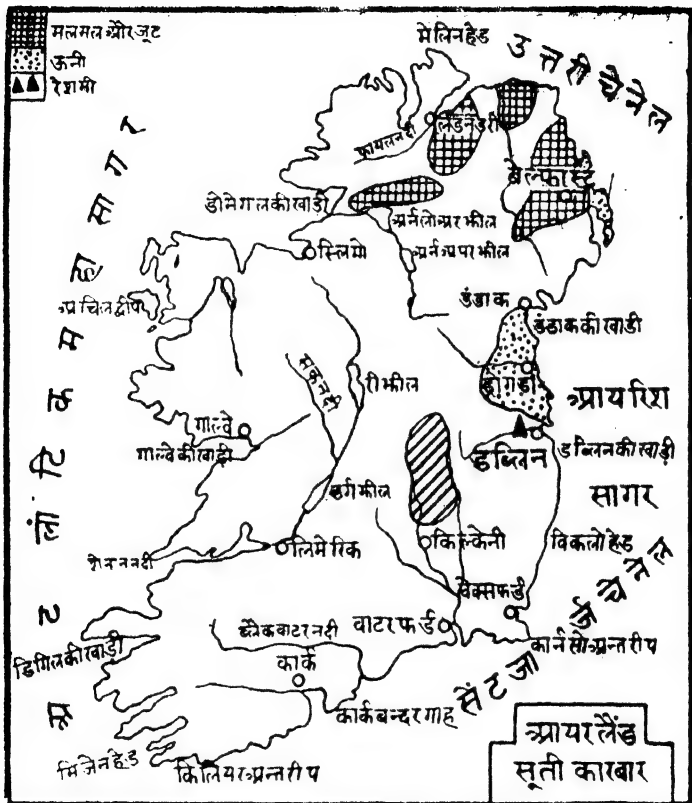
पर बिछा हुआ है। इसे निकालकर और जलाकर लोग चूना तयार करते हैं। आयरलैंड के मोर्न पर्वत और रुकली पर्वत में दानेदार पत्थर बहुत है। गाल्वे और डोनेगल में लाल और कई रंग का पत्थर निकलता है। इनसे घर बनाये जाते हैं। चूने के पत्थर पर अधिक दबाव और गरमी पड़ने से वह संगमरमर में बदल जाता है। अक्सर यह गरमी खौलते हुये लावा से मिल जाती है। आयरलैंड में कई प्रकार का संगमरमर पाया जाता है। कोनेमारा में हरा संगमरमर, किल्केनी में काला कार्क में लाल और डोनेगल में सफेद संगमरमर पाया जाता है। किल्केनी और वेलेंशिया द्वीप में स्लेट की खानें हैं। बलुआ पत्थर डोनेगल में बहुत पाया जाता है।

पीट आयरलैंड के सभी दलदली तालाबों में पाया जाता है : इसे काट कर और सुखा कर लोग जलाते हैं।

जलवायु

आयरलैंड की जलवायु आर्द्र और समशीतोष्ण है। योरुप के सबसे अधिक पश्चिम में स्थित होने के कारण पछुआ हवायें यहां सब से पहले प्रवेश करती हैं। इस लिये आयरलैंड में योरुप के दूसरे देशों की अपेक्षा अधिक वर्षा होती है। आयरलैंड के पश्चिमी भागों में सबसे अधिक वर्षा होती है। इस ओर के पहाड़ी भागों में प्रतिवर्ष ८० इंच से अधिक वर्षा होती है। पूर्व की ओर वाले मैदानी भागों में सब से कम वर्षा होती है। जिन भागों में कम वर्षा होती है वहां भी ३० इंच से अधिक ही पानी बरसता है। प्रायः सभी भागों में हवा आर्द्र (गीली या नम) रहती है। अच्छी तेज़ धूप वाले खुश्क दिनों का आयरलैंड में अभाव सा है। अधिकतर दिनों में मेंह बरसता है या बदली रहती है।

अटलांटिक की ओर से आने वाली पछुआ हवायें अपने साथ शीत काल में कुछ गरमी और ग्रीष्म काल में शीतलता लाती हैं। इसी से शीतकाल में इंगलैंड की अपेक्षा आयर्लैंड कुछ अधिक गरम रहता है।

आयरलैंड-दर्शन

ग्रीष्म में आयरलैण्ड कुछ अधिक शीतल रहता है। शीत का साधारण तापक्रम ४० अंश फारेन हाइट रहता है। ग्रीष्म काल का ताप क्रम ६० अंश हो जाता है। इस प्रकार आयरलैंड का औसत तापक्रम ५० अंश फारेन हाइट रहता है। शीत काल में आयरलैंड का दक्षिणी-पश्चिमी भाग समुद्र के प्रभाव से सब से अधिक गरम रहता है। ग्रीष्म काल में दक्षिणी-पूर्वी भाग सब से अधिक गरम रहता है क्योंकि आयरलैंड के इसी भाग पर समुद्र का सब से कम शीतलताप्रद प्रभाव पड़ता है। उँचाई के अनुसार भिन्न भिन्न भागों की वर्षा और गरमी में अन्तर पड़ता है। सब से अधिक वर्षा पश्चिमी भाग के पर्वतीय प्रदेश में होती है। ऊंचे भाग अधिक शीतल भी रहते हैं। आयरलैंड के दलदल और हरे भरे भाग भी तापक्रम में बहुत अन्तर नहीं होने देते हैं। शीतकाल में योरुप के कई देशों में ज़मीन बरफ़ से ढक जाती है। लेकिन आयरलैंड में अपने देश की तरह हरी भरी घास रहती है। रात में सरदी असह्य नहीं होती है। इसी से घोड़े, गाय और भेड़ों को घरों के भीतर बांधने की आवश्यकता नहीं पड़ती है।

देश दर्शन

कृषि और चरागाह

आयरलैंड की भूमि बड़ी उपजाऊ है। इसी मिट्टी में पौधों का भोजन अधिक मात्रा में पाया जाता है। मिट्टी में चूने की पर्याप्त मात्रा होने से उसकी उपयोगिता और भी अधिक हो गई है। लेकिन जलवायु शीतार्द्र होने के कारण यह देश खेती की अपेक्षा चरवाही के लिये अधिक अनुकूल है। इसी से सौ वर्ष से पहले जहां आयरलैंड में ८७ लाख एकड़ भूमि में चरागाह थे वहां आजकल प्राय. डेढ़ करोड़ एकड़ भूमि में चरागाह हैं। बहुत से भागों की भूमि इतनी अच्छी है कि यहां की घास सुखा कर दूसरी ऋतु के लिये रख ली जाती है। जिन भागों में घास बहुत अच्छी होती है वहां गाय-बैल पाले जाते हैं। कुछ जानवर मांस के लिये पाले जाते हैं। अधिकतर गाय दूध, मक्खन और पनीर के लिये पाली जाती हैं। बहुत सा मक्खन कार्क और वाटर फर्ड बन्दरगाहों से इङ्गलैंड को भेज दिया जाता है। आयरलैंड में भेड़ें भी बड़े चाव से पाली जाती हैं। विकलो और मेयो में पहाड़ी भेड़ें पाली जाती हैं। लेकिन आस्ट्रे

जंगल
आर्न द्वीप
डोनेगाल खाड़ी
आचिल द्वीप
डुब्लिन
सागर
विकलोहेड
लिमेरिक
शूरनदी
कार्नसोअन्तरीप
कार्क बन्दरगाह
किलियाअन्तरीप
आयरलैंड
वनस्पति

आयरलैंड
वार्षिक वास्तविक तापक्रम
मेलिन हेड
उत्तरी चेनेल
लंदनडरी
बेलफास्ट
डोनेगल की खाड़ी
आपरिश
सागर
डबलिन
डबलिन की खाड़ी
लिमेरिक
कार्क
कार्क बन्दरगाह
कार्नसी अन्तरीप
किलिपस अन्तरीप
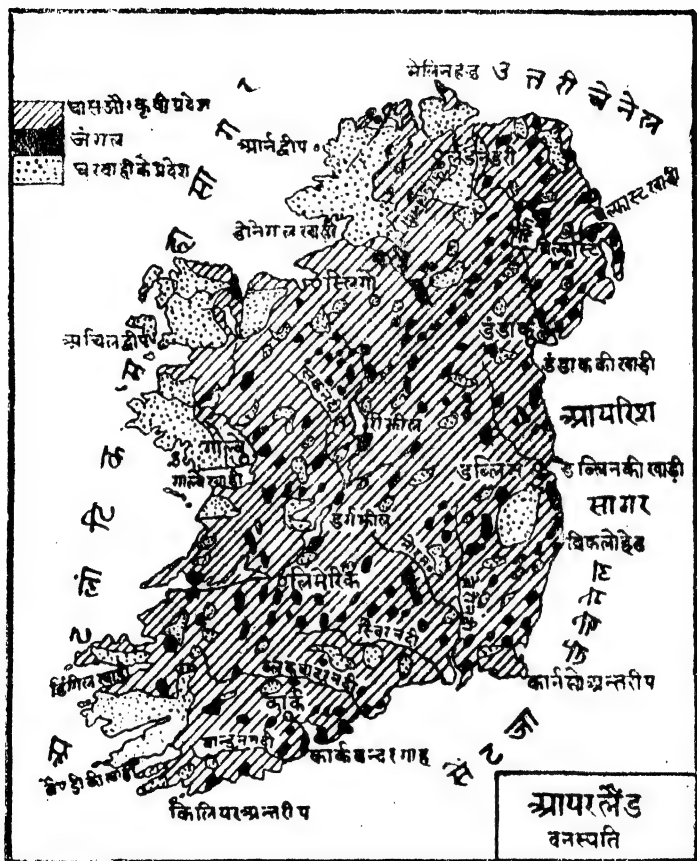
लिया और न्यूज़ीलैंड के संघर्ष में आयरलैंड की ऊन कुछ पिछड़ गई है। घर का कूड़ा कचड़ा साफ करने के लिये सुअर पाले जाते हैं। सुअर का मांस आयरलैंड के बड़े बड़े बाज़ारों में बिकता है। आयरलैंड के किसान अंडों के लिए मुर्गी ओर दूसरी चिड़ियां पालते हैं कुछ किसान शहद के लिये शहद की मक्खियां भी पालते हैं। आयरलैंड के कुछ खुश्क भागों में घोड़े, गधे और खच्चर पाले जाते हैं। तालाबों, नदियों और पड़ोस में समुद्रों में मछलियां बहुत हैं। इन्हें पकड़ने में आयरलैण्ड के हज़ारों मनुष्य लगे हुये हैं। पड़ोस के समुद्रों में मछलियों का अधिकतर भोजन गल्फ स्ट्रीम द्वारा आ जाता है।

आयरलैंड की खेती में जड़ों वाली फसलें अधिक महत्व की हैं। आलू इस देश का प्रधान भोजन है। कुछ चुकन्दर और गाजर की खेती भी होती है। मलमल के कारबार के लिये यहां फ्लैक्स (सन) की खेती होती है। पहले इसकी खेती बहुत अधिक होती थी। अधिक आर्द्र जलवायु होने से आयरलैंड में अन्न की फसलें अधिक न बढ़ सकीं। फिर भी आयरलैंड में कई लाख एकड़ भूमि गेहूँ उगाने के काम आती है। आर्द्र जलवायु

होने के कारण आयरलैंड का गेहूँ कुछ गीला सा होता है और दूसरे देशों के सामने संघर्ष में नहीं ठहर सकता। जई (ओट) अधिकतर अल्स्टर प्रान्त में होती है। जौ शराब बनाने के लिये आयरलैंड के प्रायः सभी भागों में उगाया जाता है। कुछ भूमि राई, बीन (अलुआ आदि दानेदार फली) उगाने के लिये अच्छी है।

कला-कौशल

हाथ से कपड़ा बुनने और कातने का काम आयरलैंड के भागों में होता है। लेकिन मलमल बनाने का उद्यम प्रधान है। यह उत्तरी आयरलैंड में होता है। इस लिनेन का रेशा फ्लेक्स (सन) के पौधे से मिलता है। फ्लेक्स की उपज के लिये आयरलैंड में आदर्श ज़मीन और जलवायु है। पहले फ्लेक्स आयरलैंड में ही पैदा होता था। आगे चलकर रूस में इसकी खेती बहुत बढ़ गई। यह भाग इंगलैंड के कारबारी प्रदेश के सामने हैं। इसलिये यहां इंगलैंड से आवश्यक मशीनों और कोयले का आना सुगम है। उत्तरी आयर-

लैंड में हालैंड, जर्मनी और ब्रिटेन के प्राटस्टेण्ट कारीगर बहुत पहले ही आकर बस गये थे। कपड़ा बुनने के लिये आयरलैंड की आर्द्र (नम) जलवायु बड़ी अच्छी है। ऐसी जलवायु में धागा नहीं टूटता है। इन कई कारणों से उत्तरी आयरलैंड लिनेन (मलमल) के उद्यम के लिये संसार भर में प्रसिद्ध है। बेल्फास्ट इसका प्रधान केन्द्र है। यहां इसके बड़े बड़े कारखाने हैं। वैसे लिस्बर्न, लंडनडरी आदि कई नगर इस कारबार में लगे हैं। प्रत्येक नगर की कोई न कोई विशेषता है। कोई शर्ट (कमीज) बनाता है। कोई दूसरी तरह का कपड़ा बनाता है। देहात की स्त्रियां और लड़कियां इस कपड़े पर सुन्दर कढ़ाई का काम करती है।

ऊनी कपड़े का काम आयरलैंड में यार्क शायर के समान उन्नत दशा में नहीं है। फिर भी यह आयरलैंड का एक घरेलू धन्धा है। यहां मज़बूत ऊनी कपड़ा तयार किया जाता है। बेलफास्ट में एक दो ऊनो मिलें भी हैं। कार्क और कई नगर ऊनी सामान के व्यापार के लिये प्रसिद्ध हैं। रेशमी कारबार आयरलैंड में कभी लोकप्रिय नहीं हुआ। डब्लिन में रेशम और ऊन को

मिलाकर एक प्रकार का कपड़ा तयार किया जाता है। जिसे पोप्लिन कहते हैं।

पहले आयरलैएड में सूत कातने का काम बहुत होता था। लंकाशायर के संघर्ष से आयरलैएड में यह कारबार प्रायः लुप्त हो गया। बेलफ़ास्ट, ड्रोघेडा, लर्गन, और पोर्टा डाउन में इस समय भी कुछ कपड़ा बुना जाता है।

हाथ से गोटा बनाने का काम आयरलैंड में बहुत अच्छा होता है। लिमेरिक नगर गोटे के लिये बहुत प्रसिद्ध है। हाल में इंगलैंड के मशीन से बने हुये सस्ते गोटेसे इस कारबार को बड़ा धक्का पहुँचा।

थोड़ी मात्रा में चमड़े के जूते, दस्ताने ज़ीन आदि बनाने का काम कार्क, डब्लिन आदि तटीय नगरों में होता है।

बेलीक्लेर (बेलफास्ट के पास) और लार्न में कागज़ बनाने के कारखाने हैं। डब्लिन के पास बढ़िया कागज़ तैयार किया जाता है। कागज़ के लिये देबदारु की लुब्दी (पल्प) रूस, नार्वे और स्वीडन से आती है। कागज़ की रद्दी से भी कागज़ बनाया जाता है।

बेल्फास्ट, डब्लिन और कार्क नगरों में शीशा,

रसायनिक पदार्थ, शराब, सिगार आदि बनाने का काम होता है।

जहाज़ बनाने का प्रधान केन्द्र बेल्फास्ट है। छोटे छोटे जहाज़ लंडनडरी, कार्क और डब्लिन में भी बनाये जाते हैं। बेल्फास्ट और लण्डनडरी में जहाज़ के रस्से बनाने का काम होता है।

नगर

बेल्फास्ट नगर (४,३८,०००) अल्स्टर प्रान्त का सब से बड़ा नगर, बन्दरगाह और राजधानी है। यह नगर लागन के मुहाने पर स्थित है। ब्रिटेन के कारबारी प्रदेश के सामने बसे होने से इसका व्यापारिक महत्व बहुत बढ़ गया है। जहाज़, रस्से, लिनेन, ऊन, ग्लास आदि का केन्द्र हो गया है। इसी से इसकी जन संख्या तेज़ी के साथ बढ़ती जा रही है। उत्तरी आयरलैंड में यह शिक्षा का भी केन्द्र है।

डब्लिन (४,७०,०००) आयरलैंड और राज-धानी और योरुप का एक बड़ा सुन्दर नगर है। आय-

रिश समुद्र के पास मध्यवर्ती मैदान ५० मील तक किनारे को छूता है। इसी के बीच में स्थित होने के कारण डब्लिन नगर आयरलैण्ड का द्वार है। यहीं होकर पुराने समय में विदेशी आक्रमण की लहर आयरलैण्ड में फैली थी। यहीं से वर्तमान समय में आयरलैण्ड का व्यापार होता है। केन्द्रवर्ती स्थिति होने के कारण वहां से रेल, सड़क और जल के मार्ग आयरलैण्ड के दूसरे भागों को गये हैं। लिफी नदी इसी नगर के पास समुद्र में प्रवेश करती है। नहरों द्वारा यह नदी शेनन और दूसरे जल मार्गों से जोड़ दी गई है। डब्लिन में कई कालेज और अजायब घर हैं। आयरलैण्ड में शिक्षा का यह प्रधान केन्द्र है। यहां कई महापुरुषों के स्मारक हैं। ट्रैम्वे शहर के बाहर कई स्थानों को चले गये हैं। डब्लिन नगर में पोप्लिन (ऊन और रेशम मिला हुआ कपड़ा) और शराब बनाने के बड़े बड़े कारखाने हैं। साबुन, मोमबत्ती बिस्कुट आदि छोटी छोटी चीज़ें बहुत बनती हैं।

कार्क (८१,०००) दक्षिण को ओर समस्त आयर-लैण्ड में तीसरे नम्बर का शहर और अटलांटिक

महासागर में चलने वाले जहाज़ों के लिये प्रधान बन्दरगाह है। ली नदी के किनारे पर दक्षिणी और पश्चिमी रेलवे का अन्तिम स्टेशन है। जहाज़, शराब और ऊनी कपड़े बनाने का काम होता है। यहीं से दक्षिणी भाग का मक्खन और पनीर बाहर भेजा जाता है।

कार्क से कुछ पूर्व की ओर वाटरफर्ड (२८०००) नगर सुइर नदी के किनारे ऐसे प्रदेश में स्थित है जहां जौ की खेती बहुत होती है। इसी से यहां जौ की शराब बनाई जाती है।

लिमेरिक (४१,०००) नगर शेनन नदी की एस्चुअरी के सिरे पर स्थित है और पश्चिमी आयरलैण्ड का प्रसिद्ध व्यापारी नगर और बन्दरगाह है। किलोगोर्ज में शेनन नदी एकदम १०० फुट नीचे गिरती है। इससे जो बिजली तयार होती है वह लिमेरिक और अन्य नगरों में रोशनी करने और लिमेरिक के चमड़े के कारखानों के काम आती है। यहां से गाय बैल, मक्खन, पनीर, सुअर का मांस और चमड़े का सामान बाहर भेजा जाता है।

लंडनडरी (४८,०००) लोग फायल के सिरे पर स्थित है। जहाज़ बनाने और मलमल (लिनेन) के कपड़े तैयार करने का एक बड़ा केन्द्र है।

किंग्स टाउन (१८,०००) डब्लिन नगर से ६ मील पूर्व की ओर बसा है। मेल स्टीमर यहीं से होलीहेड को जाया करते हैं।

डंडाक (१४,०००) ग्रेट नार्दन रेलवे का प्रधान स्टेशन है। यहीं इस रेलवे के इंजिन तयार होते हैं। मलमल, शराब और जहाज़ बनाने के कारखाने हैं। ड्रोघेडा भी इसी लाइन का एक स्टेशन है। यहां भी शराब और कपड़ा बुनने के कारखाने हैं।

न्यूरी नगर (१३,०००) कालिंगफर्ड के सिरे पर दक्षिणी-पूर्वी कारबारी प्रदेश का द्वार है।

लुर्गन (१२,०००) और लिस्बर्न (११,५००) नगर उत्तरी रेलवे पर लिनेन के कारबार के लिये प्रसिद्ध है। वेक्सफर्ड (११५००) स्लेनो नदी के मुहाने के पास दक्षिणी-पूर्वी सिरे पर एक व्यापारी नगर है।

बेलोमेना (११,०००) ब्रेड नदी के किनारे मिड-लैण्ड रेलवे पर फ्लैक्स की मंडी है।
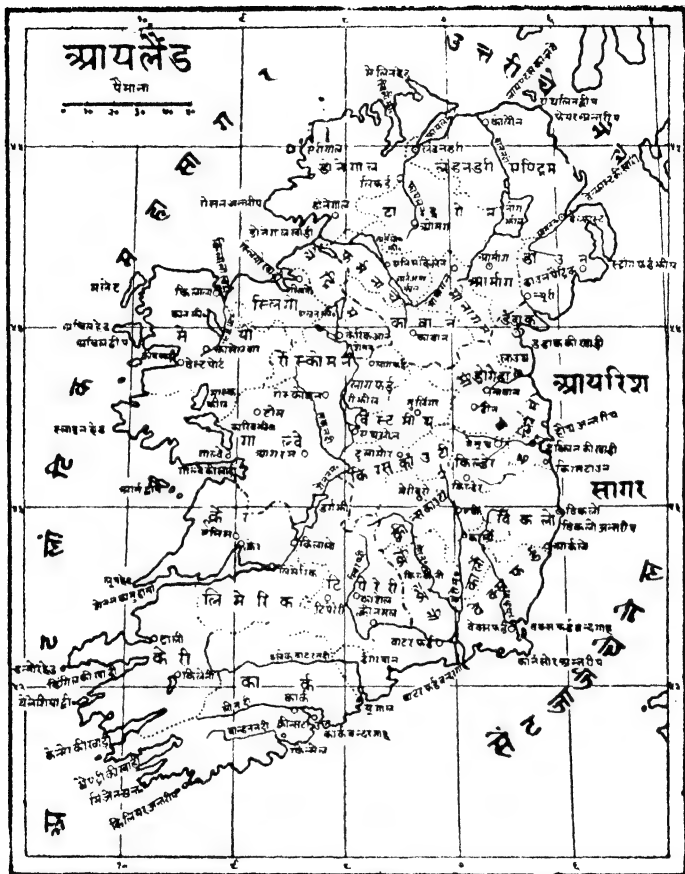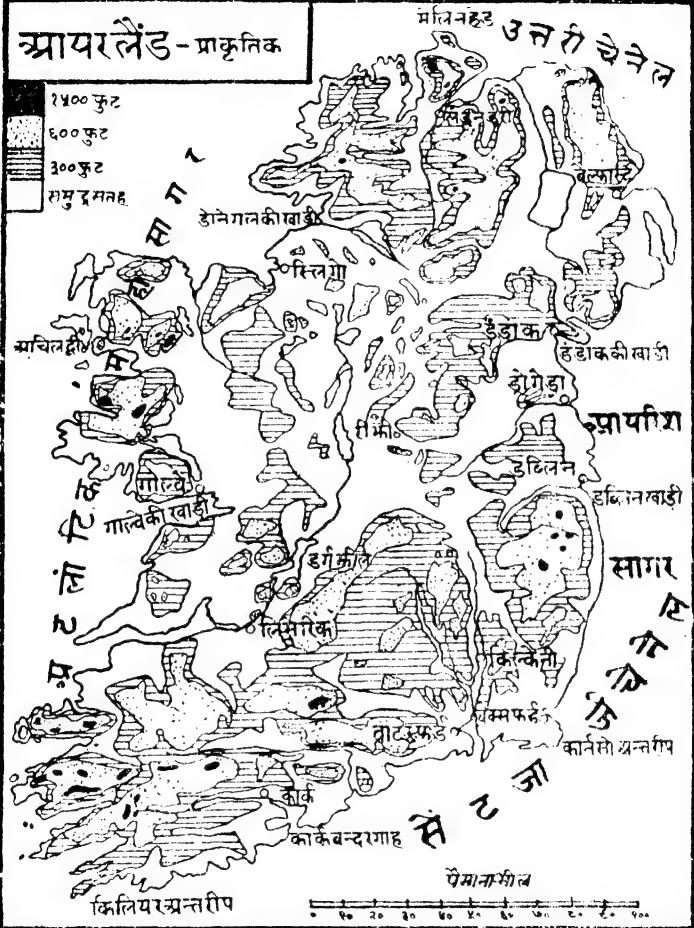
आयर्लैंड
पैमाना
आयरिश
सागर

स्लिगो कनाट के उत्तरी किनारे पर व्यापारी बन्दरगाह है। इसका व्यापार ग्लासगो और लिवरपूल से होता है।

एथलोन (७०००) आयरलैण्ड का अत्यन्त मध्यवर्ती नगर है और रेल तथा जल मार्गों से प्रायः प्रत्येक भाग से जुड़ा हुआ है। टिपरेरी कृषि-प्रदेश की एक मंडी है।

शासन-विभाग

आयरलैण्ड दो प्रधान भागों में बटा हुआ है। उत्तरी आयरलैण्ड (क्षेत्र फल ५२३८ वर्ग मील और जन संख्या १२,८५,०००) प्रायः पुराना अल्स्टर प्रान्त है। इस प्रान्त में रोमन केथलिक ३३ फी सदी शेष प्राटस्टेएट और एपिस्कोपल गिरजे के मानने वाले हैं जो धर्म जाति, विचार और सहानुभूति में प्रधान आयरलैण्ड से भिन्न हैं। इस उत्तरी भाग के लोग ब्रिटेन से सम्बन्ध रखने के पक्ष में रहे हैं और देश की पूर्ण स्वाधीनता के विरोधी रहे हैं। इस भाग की भाषा अंग्रेज़ी है। एर या आइरिश फ्री स्टेट प्रधान

आयरलैंड है। इसका क्षेत्रफल २६,६०१ वर्ग मील और जन-संख्या २९,३७,००० है। इस भाग में ९३ फी सदी रोमन कैथलिक हैं। इसकी भाषा आयरिश और अंग्रेज़ी है।

पुराने अलस्टर प्रान्त का कुछ भाग (जिसमें कावान, डोनेगल और मोनाघन काउंटी भी शामिल है और जिसकी जन संख्या ३ लाख है) आइरिश फ्री स्टेट में शामिल कर लिया गया है। शेष उत्तरी आयरलैण्ड का अंग है। इसमें काउंटी (आण्ट्रिम, अर्मांग, डाउन, फर्मेनाग, लण्डनडरी) और २ काउटीबरो (बेल्फास्ट और लण्डनडरी) हैं।

आयरिश फ्री स्टेट (एर) में नया अल्स्टर लेन्स्टर, मन्स्टर और कनाट चार प्रान्त हैं। लेन्स्टरकी जन-संख्या ११,४९०००, मन्स्टर की ९,७१,०००, कनाट की ५,५३,००० और नये अलस्टर की ३,००,००० है।

लेन्स्टर प्रान्त सब से अधिक पूर्वी है। इसमें १२ काउंटी और एक काउंटोबरो है। पांच काउंटी लाउथ, मीथ, डब्लिन, विकलो और वेक्सफर्ड काउंटी समुद्र तट के पास स्थित हैं। शेष सात वेस्टमीथ, लांगफर्ड, लेक्स

(क्वीन्स काउंटी) आफेली (किंग्स काउंटी), कार्लो किल्केनी और किल्डेर समुद्र से दूर भीतर की ओर स्थित हैं। डब्लिन काउंटी बरो भी है।

मन्स्टर प्रान्त में ६ काउंटी क्लेर, कार्क, केरी लिमेरिक, टिपरेरी, वाटरफर्ड और तीन (कार्क, लिमेरिक और वाटरफर्ड) काउंटी बरो हैं। इनमें वाटरफर्ड, कार्क, केरी और क्लेर समुद्र तट पर स्थित हैं।

कनाट प्रान्त नये अल्स्टर को छोड़ कर प्रधान आयरलैण्ड के और प्रान्तों में सब से छोटा है। इसमें गाल्वे, लेट्रिम, मेयो रोस्कोमन और स्लिगो काउंटी है। इनमें केवल रोस्कोमन काउंटी भीतरी है। शेष समुद्र-तट पर स्थित हैं।

संक्षिप्त इतिहास

आयरलैण्ड अति प्राचीन समय में ग्रीनलैण्ड के समान बरफ से घिरा हुआ था। बरफ से मुक्त होने पर वर्तमान दलदली भीलों, निचले मैदानों और पहाड़ियों का विकास हुआ। कम से कम दो बार इस द्वीप का स्थल-सम्बन्ध ब्रिटेन और योरुप से जुड़ा और टूटा। परन्तु यह प्राकृतिक इतिहास है इसकी बारीकियों में न जाकर यहां के मानव इतिहास का संक्षिप्त परिचय दिया जाता है।

आयरलैण्ड के प्रथम निवासी फोरमोरियन लोग थे। कहा जाता है कि ये तूरानी वंश के थे। इनका रंग कुछ सांवला और कुछ नाटा था। परन्तु आयरलैंड की पुरानी दन्त कथायें इन्हें विशाल काय दानव बतलाती हैं। ये लोग शिकारी और मछली पकड़ने वाले थे। यह धातु के उपयोग से अनभिज्ञ थे। इनका जीवन वर्तमान समय के बद्दलैप लोगों से कुछ मिलता जुलता था।

इनके बाद फिर्बोल्ग लोगों का आगमन हुआ। ये लोग अधिक उन्नत और शक्तिशाली थे। इनके बाद स्कैंडीनेविया से त्वाथ दानान लोग आये। इनकी आँखें

नीली और कद लम्बा था। फिर्बोल्ग और दानान लोगों में कई लड़ाइयां हुई। त्वाथ दानान शक्तिशाली होने के अतिरिक्त बड़े चालाक थे। ये धातु का भी प्रयोग जानते थे। इसलिये इन्होंने शीघ्र ही अपने शत्रु को हरा दिया और सारे आयरलैंड पर अपना अधिकार कर लिया। इन्होंने मिट्टी और पत्थर के क़िले बनाये और २०० वर्ष तक आयरलैंड पर शासन किया। स्कोटी लोगों ने यहां आकर इन्हें हरा दिया।

आयरलैंड का बहुत पुराना इतिहास दन्त कथाओं से भरा पड़ा है। इस समय देश जंगलों से भरा पड़ा था। इसमें जंगली जानवर विचरते थे। आयरलैन्ड के इस पौराणिक काल में असंख्य राजा हुये। इस समय के लोग कुछ खेती करते थे। अधिकतर लोग गाय-बैल, भेड़-बकरी चराते थे। भेड़िया और दूसरे जंगली जानवरों का शिकार किया जाता था। इस समय के आयरलैंड में दासता भी फैली हुई थी। एंग्लो-नार्मन विजय के समय आयरलैंड अंग्रेज़ गुलामों से भरा पड़ा था। जब आयरलैंड वाले इंगलैंड के तट पर आक्रमण करते तभी वे अंग्रेज़ों को गुलाम बना कर ले जाते। कहा

जाता है कि सेंट पैट्रिक भी दासता के रूप में आयरलैंड पहुँचा था। तीसरी शताब्दी में ब्रिटेन के समस्त पश्चिमी तट पर आक्रमण हुआ। बहुत धन लूटा गया और बहुत से लोग दास बनाये गये। छठी शताब्दी के पहले आयरलैंड के लोग लड़ना अपना प्रथम कर्तव्य समझते थे। आयरलैंड का युवक अपने भाले को अपने शत्रु के रुधिर से न धो सके तो उसके लिये यह सब से बड़ा अपमान समझा जाता था। स्त्रियां निर्भीक होकर अपने अपने पति के साथ शत्रु को मारतीं अथवा स्वयं मर जाती थीं। छठीं शताब्दी में नियम बना कि स्त्रियां घर पर रहें बाहर लड़ने के लिये न जावें। कुछ लोगों का अनुमान है कि यहां बहुत पहले आर्य राज्य था। इनके क़ानून भारतवर्ष के आर्यों के क़ानूनों से मिलते और बहुत उन्नत थे। बुक आफ ऐसिल और सेञ्चस मोर मनुस्मृति के समान नियमों के ग्रन्थ हैं। इन नियमों को ब्रेहन (सम्भवतः ब्राह्मण) लोग बनाते थे जो उस समय अक्सर लोगों के न्यायाधीश होते थे। भिन्न भिन्न भागो में भिन्न भिन्न फिरकों के लोग रहते थे। वे एक दूसरे से लड़ते रहते थे।

सेन्ट पैट्रिक के आने से ईसाई धर्म तेज़ी से फैला लोगों में नये धर्म के प्रति इतना उत्साह बढ़ा कि जगह जगह पर ईसाई धर्म का प्रचार करने के लिये आश्रम खुल गये।

५२१ ईस्वी में डोनेगल में सेण्ट कोलम्बा का जन्म हुआ। ५६५ ईस्वी में वह अपने १२ साथियों के साथ आयरलैण्ड से स्काटलैण्ड को गया। पश्चिमी ईसाई धर्म के इतिहास में यह वर्ष बहुत महत्त्वपूर्ण है। यदि दक्षिणी इंगलैंड को ईसाई बनाने का श्रेय रोम को है तो उत्तरी इंगलैंड को ईसाई बनाने का श्रेय आयरलैंड को है। दोनों गिरजों में भेद बढ़ रहा था। इस बीच में आयरलैण्ड के सरदारों में निरक्षरता और शिथिलता बढ़ गई। आठवीं शताब्दी के अन्तिम दस वर्षों में, टिड्डीदल की भांति पिक्ट, डेन और नार्समयन को लादकर वाइकिंग जहाज़ आयरलैंड के तट पर आने लगे। जहां जहां ये लोग पहुंचते वहां सर्व नाश और आपत्ति के बादल मंडरा जाते।

इन लोगों ने गिरजाघरों को जलाया। मण्क (भिक्षु) लोगों को नष्ट किया और उत्तरी पूर्वी आयरलैंड पर

अधिकार कर लिया। शेष लोगों से नासिका-धन लिया। जो लोग यह धन नहीं देते थे। उनकी नाक काट ली जाती थी। अन्त में निराशा से चिढ़ कर दो तीन फ़िरकों ने मिल कर विद्रोह किया और ८४५ में आक्रमणकारियों के सरदार को मार डाला। फिर भी तीन सदियों तक इन लोगों के हमले होते ही रहे। नार्वे स्वीडन, डेनमार्क और आयसलैंड के लोग लगातार भयानक हमले करते रहे। ६४८ में इनका एक सरदार ईसाई हो गया। ईसाई धर्म के फैलने पर भी आक्रमण-कारियों के वर्ताव में कोई सुधार न हुआ।

अन्त में आयरलैंड के एक सरदार (ब्रियन बारो-इम्हे या बोरू) ने डेन लोगों को ६६८ में लिमेरिक के युद्ध में हराया प्रायः इसी समय आयरलैंड के दूसरे सरदार मलाची ने उन्हें टारा स्थान पर हराया। लेकिन बोरूने देशभक्ति को तिलांजलि देकर मलाची को हराया और टारा के शाही क़िले को छीन कर जला दिया। धीरे धीरे बोरू ने आयरलैंड के अन्य कई सरदारों पर विजय प्राप्त की। बोरू ने कई बार डेन लोगों को हरा कर डब्लिन में प्रवेश किया। ब्रोडार नामी एक

वाइकिंग ने बोरू पर अचानक हमला किया। युवावस्था में बोरू बल में अद्वितीय था। इस समय भी उसने साहस से आक्रमणकारी के पैरों पर तलवार चलाई। लेकिन ब्राडार ने ऐसा फरसा मारा कि बोरू का सिर ठोड़ी तक दो टुकड़ों में फट गया। बोरू की मृत्यु से आयरलैंड का राज्य फिर छिन्न भिन्न हो गया। बोरू का विरोधी नेता मलाची आयरलैंड की गद्दी पर बैठा। आयरलैंड के छोटे छोटे सरदार फिर आपस में झगड़ने लगे। ११५६ में ओनेल वंश आयरलैंड की गद्दी पर बैठा।

इंगलैंड में राज्य करने वाले एंग्लो-नार्मन राजा आयरलैन्ड की घात में हो थे कि ११६६ ई० में लेन्स्टर का राजा अपने विरोधियों से पराजित होकर ब्रिस्टल (वेल्स) में शरण और सहायता लेने आया। उसे सैनिकों की सहायता मिली और वह आयरलैण्ड को लौट गया। लेकिन ११७१ में इंगलैंड का राजा हेनरी द्वितीय एक प्रबल सेना (४००० सिपाही २०० नाइट और युद्ध का सामान) लेकर आयरलैंड के वाटर फर्ड बन्दरगाह पर उतरा। उसके साथ पुल बनाने वाले

कारीगर और सड़क तयार करने वाले मज़दूर भी थे। आयरलैंड के छोटे छोटे सरदार इस प्रबल सेना को देख कर एकदम भयभीत हो गये। एक एक कर के वे हेनरी के सामने सिर झुकाने लगे। वेक्सफर्ड में अपना अड्डा दृढ़ कर के हेनरी टिपरेरी और वाटरफर्ड होता हुआ डब्लिन की ओर बढ़ा। यहां के डेन लोग एकदम उसके भक्त बन गये। लेन्स्टर के छोटे छोटे सरदारों ने भी अपना सिर नवाया। डब्लिन में उसने बड़ा दरबार किया। इससे उसकी शान और भी अधिक बढ़ गई। शीत काल में भयानक तूफान उठे। इसके बाद हवा कुछ पूर्व की ओर चलने लगी। तभी हेनरी अपने नये राज्य (आयरलैंड) को छोड़ कर इंगलैंड को लौटा।

हेनरी फिर आयरलैंड में कभी नहीं आया। १४ वर्ष बाद उसने अपने युवा लड़के जान को आयरलैंड भेजा। इस बार आयरलैंड के सरदार कुछ मिल गये थे। उन्होंने जान का बड़ा तिरस्कार किया। विवश होकर हेनरी ने उसे इंगलैंड बुला लिया। पच्चीस वर्ष बाद जब जान राजा हुआ तो उसने किराये की फौज इकट्ठी कर के आयरलैंड पर चढ़ाई की। इस बार उसे

कुछ सफलता मिली। लेकिन वह आयरलैंड में अधिक न ठहर सका। आपस में लड़ने वाले छोटे छोटे सरदारों की संख्या बढ़ गई। साथ ही साथ अत्याचार और अन्याय भी बढ़ने लगा। अंग्रेज़ों को जागीरें मिलने लगीं।

एडवर्ड प्रथम के समय से इंगलैन्ड को कई लड़ाइयों में फँसना पड़ा। इससे आयरलैंड से बहुत से सिपाही और धन भी वहां से खींचा गया। आयरलैन्ड के सिपाही मुट्ठी भर भोजन और घास के बिछौने से ही सन्तुष्ट होकर दिन भर धावा मारते थे। धीरे धीरे इंगलैन्ड का अंकुश भी ढीला पड़ने लगा। लेकिन आयरलैंड को दबाने की बात इंगलैंड ने न भूली।

१३९४ ईस्वी में इंगलैंड का राजा रिचार्ड द्वितीय ३०,००० धनुर्धारी और ४०,००० अन्य सशस्त्र सैनिकों को लेकर आयरलैंड पर चढ़ आया। रिचार्ड ने भी दरबार किया। लड़ाइयां लड़ीं और आयरलैंड में ९ महीने बिताये लेकिन वह वहां अपना दृढ़ शासन न जमा सका।

आयरलैंड की फूट से कुछ समय तक इंगलैण्ड

निश्चिन्त रहा। लेकिन जब आयरलैंड में केथलिक धर्म को दबाने और प्राटेस्टेण्ट धर्म के लादने का प्रयत्न किया गया तब आयरलैंड में घोर अशान्ति फैली और आपस की फूट अचानक एकता में बदल गई। विद्रोह की आग ज़ोर से फूटने लगी। महारानी एलिज़बेथ के शासनकाल में तीन बार भयानक विद्रोह हुये। इंगलैंड की ओर से वे अत्याचार पूर्वक दबाये गये। अन्तिम विद्रोह एलिज़बेथ के मरने से केवल दो दिन पहले शान्त हो पाया था।

१६१३ ई० में अंग्रेज़ी सरकार ने अपने कार्यों को वैधानिक रूप देने के लिये पहली बार आयरिश पार्ल्यामेण्ट को बुलाने का निश्चय किया। लेकिन आयरलैंड में लगातार प्राटस्टेण्ट लोगों को बसाने के पश्चात् भी वहां रोमन केथलिक लोग बहुसंख्या में थे। ऊपरी मंडल में तो अपनी इच्छानुसार लार्डों और प्राटेस्टेण्ट विशपों (बड़े बड़े पादरियों) को भर लेने से काम चल गया। निचले मंडल हाउस आफ कामन्स के चुनाव के लिये तरह तरह की चालें चली गईं। फिर भी सरकार ने बहुत थोड़ी संख्या से बहुमत प्राप्त कर पाया था। इन चालों से राजभक्त केथलिक लोग भी चिढ़ गये थे। जब

सभा का वक्ता (स्पीकर) एक प्राटस्टेएट नियुक्त किया गया तब तो केथलिक लोग और अधिक क्रुद्ध हो गये।

पुरानी उपाधियों की छानबीन करने के लिये एक विभाग खोला गया। यह इस बात का पता लगाता था कि कहीं किसी उपाधिकारी में किसी प्रकार का दोष तो नहीं है। क्षुद्र कारणों से भी ज़मीन का अधिकार छिन जाता था और इस प्रकार हज़ारों एकड़ ज़मीन राजा की समझी जाती थी यह ज़मीन आयरलैंड में आकर बसने वाले अंग्रेज़ों को दे दी जाती थी।

१६३२ ईस्वी में स्ट्रेफर्ड आयरलैंड पहुँचा। यह बड़ा कूटनीतिज्ञ था। उसकी धारणा थी कि पार्ल्यमेन्ट को राजा की दासी बनाया जा सकता है। उसने इस प्रकार से चुनाव करवाया कि रोमन केथलिक और प्राटस्टेन्ट सदस्य समान संख्या में पार्ल्यामेन्ट में पहुँचे। उसने घोषणा की कि राज्य को चुनाव आदि में १ लाख पौंड का घाटा हुआ है। पहले पार्ल्यामेंट इसे अदा करने की स्वीकृति दे दे फिर अगली बैठकों में दूसरी रियायतों पर विचार किया जायगा। सदस्यों ने अनिच्छापूर्वक किसी तरह इस प्रस्ताव को मान लिया। लेकिन

आगे चल कर पार्ल्यामेंट भंग कर दी गई और चार वर्ष तक पार्ल्यामेंट का कोई दूसरा अधिवेशन ही न हुआ। और भी कई उपायों से उसने आयरलैण्ड से बहुत सा कर इकट्ठा किया। यह धन १०,००० पैदल और १००० घुड़सवार सेना को एकत्रित और सुसज्जित करने में खर्च किया गया। वह जन्म से ही अत्याचारी था। उसके समय में आयरलैण्ड में हाहाकार मच गया। एक बार उसके दिमाग में यह घुसा कि आयरलैण्ड का ऊनी व्यापार इंगलैण्ड के व्यापार को धक्का पहुँचायेगा। फिर क्या था आयरलैण्ड के ऊन का व्यापार नष्ट कर दिया गया।

१६४१ में उसकी मृत्यु से आयरलैण्ड वासियों ने कुछ सुख की सांस ली।

१६४१ के अक्तूबर मास में आयरलैंड निवासियों ने एक बार फिर विदेशियों को भगाने का निश्चय किया। हज़ारों बाहर से आकर बसे हुये विदेशी घेर लिये गये और मार डाले गये। इस विद्रोह को दबाने के लिये ब्रिटिश पार्ल्यामेंट ने १०,००,००० पौंड खर्च करने का प्रस्ताव पास किया। वास्तव में यह धन विद्रोही

आयरलैंडवासियों की भूमि को ज़ब्त करके आया। अपने धर्म और भूमि की रक्षा के लिये आयरलैंडवासी जी तोड़ कर लड़े और १६४९ ईस्वी तक यह युद्ध चलता रहा। क्रामवेल के समय में अल्स्टर में बसे हुये प्राचीन आयरलैंडवासियों से ज़मीन छीन ली गई। वे कनाट प्रान्त के जंगली और दलदली प्रदेश में भगा दिये गये। उनकी यह भूमि उन अंग्रेज़ी सिपाहियों को दी गई जिन्होंने आयरलैंड को जीतने और दबाने में सहायता दी। आयरलैंड में आयरिश धर्म, जाति और सभ्यता के कट्टर विरोधी अंग्रेज़ ज़मींदार बना दिये गये। इस प्रकार आयरलैंड को अपनी पराजय का गहरा मूल्य देना पड़ा। चार्ल्स द्वितीय के समय में आयरलैंडवासियों के हाथ में केवल एक तिहाई भूमि रह गई नवागन्तुकों से आयरलैण्ड को भर देने का प्रयत्न करने पर भी आयरलैण्ड के निवासियों की संख्या इस समय ६ गुनी अधिक थी। क्राम्वेल के अत्याचार से आयरलैण्ड की चुनी हुई एक तिहाई जनसंख्या नष्ट कर दी गई। आठ वर्ष में ६ लाख मनुष्य मार डाले गये। जो बुड्ढे, बच्चे और सुकुमार स्त्रियां बचीं उन्हें देश से

निर्वासित कर दिया गया। असंख्य कुटुम्ब अपना सामान जानवरों की पीठ पर लाद कर पश्चिम की ओर दलदली, जंगली अथवा उजाड़ प्रदेशों की ओर भगा दिये गये। उनके सुसज्जित घर और उपजाऊ खेत नये अंग्रेज़ सिपाहियों ने छीन लिये। ब्रिटिश सरकार को आशा थी कि कुछ ही वर्षों में सारे आयरलैण्ड में अंग्रेज़ भर जायंगे और आयरिश जनता एकदम नष्ट हो जायगी। इसमें उसे निराशा हुई। तरह तरह के प्रलो-भन होने पर भी नये सैनिक उपनिवेश आशा के अनु-सार न फैल सके। उधर दीन हीन और असहाय आय-रिश लोग फिर अपने देश में फैलने लगे। फिर भी आयरिश केथलिक लोगों को बड़ी बड़ी सरकारी नौकरी नहीं मिलती थी। यदि आयरिश केथलिक पादरी प्राट-स्टेण्ट गिरजों में न जाते तो उन पर जुर्माना होता और वे कैद कर लिये जाते। दुःखी देश का दुःख दूर करने के लिये जेम्स द्वितीय जो स्वयं आपत्तियों का शिकार था और इंगलैण्ड का राज सिंहासन छोड़ कर फ्रांस भाग गया था, १६८६ में आयरलैण्ड में आया। आय-रिश लोगों ने उसका अच्छा स्वागत किया लेकिन

आयरलैंड- जुलाई समताप रेखायें

आयरिश

सागर

इंडाक की खाड़ी

डबलिन

किल्केनी

लिमरिक

वाटरफर्ड

कार्क

कार्क बन्दरगाह

तापक्रम फारेनहाइट अंशों में
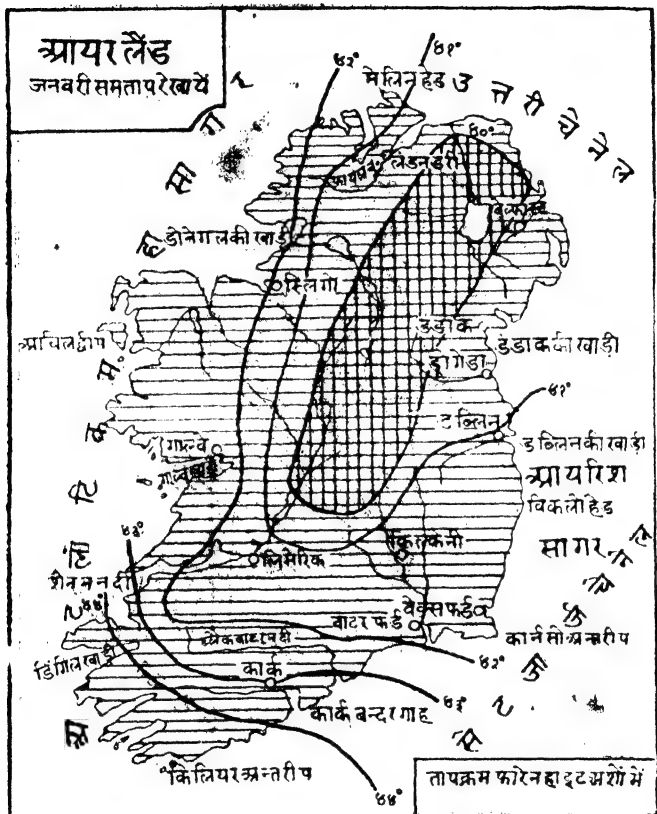
अलस्टर में उसे कोई सफलता न मिली। अंग्रेज़ों ने जेम्स के दामाद विलियम को अपना राजा बनाया। यह विलियम सुसज्जित सेना लेकर आयरलैण्ड पर चढ़ गया। निहत्थे किसान बुरी तरह से मारे काटे गये। जब जेम्स आयरलैन्ड को छोड़ कर फ्रांस गया तो आयरलैन्ड की दशा और भी अधिक शोचनीय हो गई। आयरलैंड के सिपाही जब जान बचाने के लिये फ्रांस को जाने लगे तो उनकी स्त्रियां और बच्चों ने भी साथ में जाने के लिये उनका रास्ता घेर लिये। लेकिन जहाज़ों में सब के लिये स्थान न था। जो स्त्रियां जहाज़ के भीतर न चढ़ सकीं उनमें कुछ जहाज़ के बाहरी भाग को पकड़े रहीं और अन्त में जहाज़ के चल देने पर पानी में डूब कर मर गईं।

कुछ वर्षों तक आयरलैंड में घोर निराशा छाई रही। जब संयुक्त राष्ट्र अमरीका ने इंगलैंड के विरुद्ध १७७५ ई० में अपनी स्वाधीनता का युद्ध घोषित किया तो आयरलैंड को भी कुछ आशा हुई। लेकिन वहां इंगलैन्ड का सैनिक शासन इतना प्रबल था कि अठारहवीं सदी में जो विद्रोह उठा उसे इंगलैंड ने तेज़ी

से दबा दिया। फिर भी आयरलैंड में स्वाधीनता की ज्योति जाग्रत रखने के लिये कई संस्थायें प्रयत्न करती रहीं। इनमें यूनाइटेड आइरिशमैन, रिबन सोसाइटी, यंग आयरलैंड पार्टी, फेनियन सोसाइटी और लैन्ड लीग प्रमुख देशभक्त सस्थायें थीं। सरकारी दमन का उत्तर सरकारी बड़े अफ़सरों की हत्या से दिया जाता। कभी आयरलैंड में निराशा के बादल घिर आते कभी आशा की ज्योति दिखाई देती। १८८० में आयरलैंड की जन संख्या ४५ लाख थी। लेकिन सरकारी दमन और दुर्भिक्ष से यह लगातार घटती गई।

धीरे धीरे अत्याचार का सामना करने के लिये जो संग्राम चलता रहा वह सफल होने लगा। १८२९ में आयरिश केथलिक लोगों को ब्रिटिश पार्ल्यामेंट में बैठने का अधिकार प्राप्त हो गया। धर्म और भूमि सम्बन्धी क़ानूनों में भी कुछ सुधार हुआ। आयरलैण्ड की भूमि के स्वामी बड़े बड़े अंग्रेज़ ज़मीदार थे। आयरिश किसान को प्रति वर्ष लगान पर ज़मीन दी जाती थी। यदि किसान अपनी मेहनत से और खाद डाल कर ज़मीन

को सुधार लेता तो उस पर लगान बढ़ जाता था। यदि उस किसान से सुधरी हुई ज़मीन छुड़ा ली जाती तो उसको किसी प्रकार का पुरस्कार (म्वावज़ा) नहीं मिलता था। १८८५ ईस्वी में भूमि सम्बन्धी क़ानून में कुछ सुधार हुआ। आयरलैण्ड के लोगों की दशा फिर भी बड़ी शोचनीय थी। होमरूल (स्वराज्य) आन्दोलन जिसका आरम्भ १८७० में हुआ था ज़ोर पकड़ता गया। इस आन्दोलन में सब से बड़ी बाधा अल्स्टर में बसे हुये अंग्रेज़ों से पड़ती थी। जब कभी इंगलैंड के कुछ उदार लोग होमरूल के प्रति सहानुभूति दिखलाते अलस्टर के लोग लड़ने के लिये तयार हो जाते। आयरलैंड में अंग्रेज़ी शासन कायम रखने में अल्स्टर से सहायता मिलती थी। इसलिये अल्स्टर वालों को कभी कोई अंग्रेज़ अप्रसन्न नहीं कर सकता था। स्वराज्य या होमरूल आन्दोलन को आयरलैण्ड में स्थापित करने के लिये खुल्लमखुल्ला व्यवस्था पूर्वक प्रयत्न किया जाता था। कुछ गुप्त क्रान्तिकारी संस्थायें छिप कर शस्त्रों के बल से आयरलैन्ड में प्रजातन्त्र राज्य स्थापित करने के पक्ष में थीं।

१६१४ में प्रथम महासमर के छिड़ जाने से आयरलैन्ड की समस्या उग्र रूप धारण करने लगी। १६१६ में इस आन्दोलन को दबाने के लिये अल्स्टर में सशस्त्र स्वयंसेवकों की सेना इकट्ठी की गई। इंगलैंड ने युद्ध समाप्त होने पर आयरलैंड को होमरूल देने का वचन दिया था। उधर आयरलैंड के देशभक्त स्वाधीनता प्राप्त करने के लिये अधीर हो रहे थे। शीघ्र युद्ध समाप्त होने के चिन्ह न देख कर आयरलैंड ने विद्रोह का झंडा उठाया और आयरलैंड को स्वाधीन घोषित किया। यह विद्रोह अत्याचारपूर्वक दमन कर दिया गया। १५ देशभक्त नेताओं को फांसी पर लटका दिया गया। आयरलैन्डवासी इस घटना को कभी न भूले। सिनफीन (प्रजातंत्र) दल ने डी वेलरा की अध्यक्षता में १६१६ से १६२१ तक खुल्लमखुल्ला युद्ध जारी रक्खा। अन्त में आर्थर ग्रीफेथ और माइकल कालिन्स (दो नरम दल के आयरिश नेताओं) ने इंगलैन्ड से सन्धि कर ली। इसके अनुसार अल्स्टर को छोड़ कर शेष आयरलैंड ब्रिटिश साम्राज्य के अन्तर्गत एक डोमीनियन (स्वराज्य प्राप्त) देश बन गया। प्रजातन्त्र दल को इससे सन्तोष

न था। आयरलैंड में ग्रह युद्ध आरम्भ हो गया। आर्थर ग्रीफेथ मर गया और कालिन्स मार डाला गया। अन्त में १९२७ ई० में डी वेलरा और उसके दल ने आयरिश फ्री स्टेट को मान लिया। १९३१ तक कास्ग्रेव आयरलैन्ड का प्रधान मन्त्री रहा। उसके समय में इंगलैंड से अच्छा सम्बन्ध बना रहा लेकिन १९३१ से डी वेलरा प्रधान मंत्री चुना गया। डी वेलरा ने आयरलैंड को इंगलैण्ड से पथक करने का पूरा प्रयत्न किया। डी वेलरा ने ब्रिटिश राजा की शपथ लेने से इनकार कर दिया और इंगलैंड को ५० लाख पौंड वार्षिक कर देना बन्द कर दिया। इंगलैंड ने आयरलैंड से आने वाले सामान पर भारी कर लगाये। डी वेलरा की सभी मांगें स्वीकार कर ली गई केवल अल्स्टर पर ब्रिटिश अधिकार बना रहा। इंगलैंड ने कोभ, बेअर हेविन और लागस्विला सैनिक जहाज़ी अड्डे आयरलैंड को लौटा दिये। वर्तमान युद्ध में आयरलैंड ने अपनी स्वाधीनता का स्पष्ट प्रमाण देने के लिये उदासीनता घोषित कर रक्खी है।

आयरलैंड की गुप्त संस्थायें

आयरलैण्ड में गुप्त संस्था का आरम्भ १६४१ ई० मे होता है। इस समय आयरलैण्ड का प्रधान रोमन केथलिक धर्म अवैध घोषित किया गया। खुल्लमखुल्ला कोई आयरलैण्डवासी इस धर्म का अनुसरण नहीं कर सकता था। इसलिये अपने धर्म को बचाने के लिये रक्षक (डिफेण्डर्स) नामक गुप्त संस्था का आरम्भ हुआ। इसकी नींव रोजर मूर ने डाली थी। वह विदेशों में घूम चुका था और स्पेन में उसने गुप्त संस्थाओं का विशेष अध्ययन किया था। क्राम्वेल के समय में अत्याचार की पराकाष्ठा हो गई थी। उस समय जैसे भेड़िया को मारने वाले और भेड़िया का सिर लाने वाले को पांच पौंड इनाम दिया जाता था उसी तरह आयरिश पादरी को मारने वाले और उसका सिर लाने वाले को पांच पौंड इनाम दिया जाता था। जो लोग छिपे हुए पादरियों का पता नहीं देते थे उन्हें भी प्राणदंड दिया जाता था। इस अत्याचार के समय डिफंडर्स संस्था को उत्तेजना मिली और बाहर रहने वाले आयरिश लोग

भी इसमें आ मिले। जहां जहां आयरलैंड के आयरिश पादरी गुप्त स्थानों में अपने धर्म का प्रचार करते थे वहां वहां डिफेण्डर्स पहरा देते थे। एक दूसरे को पहचानने के लिये वे 'गाड अवर लेडी रोरी ओमूर' कहा करते थे। इस संस्था ने आयरलैण्ड से एकता बढ़ाई और अंग्रेज़ तथा स्काट प्राटेस्टेण्ट लोगों को बध करने के लिये आयरलैण्डवासियों को प्रोत्साहित किया।

१७४५ ई० में केथलिक लोगों को आज्ञा मिली कि वे अपने धर्म के अनुसार पूजा कर सकते हैं। फिर भी यह संस्था बनी रही और अंग्रेज़ ज़मींदारों के विरुद्ध अपना काम करती रही। इस संस्था के अधिकतर सदस्य किसान थे। इनका कहना था कि आयरलैण्ड की ज़मीन आयरलैण्ड वालों के लिये है। वह बाहर से आये हुये अंग्रेज़ों के लिये नहीं है।

आगे चल कर इसकी कई शाखायें हो गईं। इन्हीं में एक ह्वाइट बायज (सफेद बालक) नाम की संस्था बनी। जब इस संस्था के सदस्य रात में हमला करने के लिये जाते थे तो वे अपने कपड़ों के ऊपर सफेद कमीज़ पहन लेते थे। इसी से इनका यह नाम पड़ा। ये लोग

लेवलर्स (ढाने वाले) भी कहलाते थे। वे अंग्रेज़ ज़मींदारों की बनाई हुई (खेतों को घेरने वाली दीवारों) और झाड़ियों को गिरा देते थे। वे उनके जानवरों को लंगड़ा कर देते थे और कभी कभी उन्हें मार भी डालते थे। १७६२ में उन्हें दबाने के लिये अंग्रेज़ों ने ह्वाइट बाय एक्ट नाम का एक क़ानून बनाया। लेकिन दबने के बदले ह्वाइट बाय इतने प्रबल हो गये कि १७७४ में दिन के समय में भी वे हमला करने लगे। फिर भी वे पकड़े नहीं जा सकते थे। कार्क बायज और राइट बायज़ भी इन्हीं से सम्बद्ध संस्थायें थीं।

अमरीका की स्वाधीनता और फ्रान्स की क्रान्ति का आयरलैण्ड पर गहरा असर पड़ा। उत्तरी आयरलैंड के आयरिश लोग प्रजातन्त्रवादी थे। दक्षिण के राजतन्त्रवादी थे। लेकिन दोनों ही इंगलैन्ड की पराधीनता से मुक्त होना चाहते थे। अतः १७६१ में यूनाइटेड आयरिशम्यन नाम की संस्था बनी। इसका उद्देश्य केथलिक और प्राटेस्टेण्ट सभी आयरलैंड वासियों को स्वाधीन करने का था। संस्था के उद्देश्यों का प्रचार करने के लिये बेल्फास्ट से नार्दन स्टार और डब्लिन से ईवनिंगस्टार नाम के

दो पत्र प्रकाशित किये गये। अंग्रेज़ी सरकार को फ्रांस का भय था ही। इन दो भिन्न दलों के मेल से उसे और भी अधिक भय हुआ। दक्षिण के केथलिक लोगों के फोड़ने के लिये १७९३ ईस्वी में केथलिक रिलीफ बिल पास किया गया। आन्दोलन फिर भी कम न हुआ। १७९४ में अंग्रेज़ी सरकार ने पत्र बन्द कर दिये और एकता के आन्दोलन को दबा दिया। १७९५ ई० में यह संस्था गुप्त बन गई। इसके सदस्यों ने फ्रान्स से सैनिक सहायता मांगी। फ्रांस से कुछ फौज अवश्य आई लेकिन इस संस्था के ५ लाख सदस्यों में ३ लाख सदस्य लड़ने के योग्य न थे। साथ ही इसके उच्च पदाधिकारी इंगलैंड की सरकार से मिले हुये थे। अतः जब इसके नेताओं की बैठक हो रही थी वे सब पकड़ लिये गये। नेताओं के अलग हो जाने से गड़बड़ी फैल गई और आन्दोलन दब गया।

रिबन म्यन—यूनाइटेड आइरिश म्यन संस्था के दब जाने पर १८०५ में रिबेनम्यन संस्था की स्थापना हुई। इसके सदस्य रिबन या फीता पहनते थे इसीसे यह नाम पड़ा। भिन्न भिन्न ज़िलों में इनके नाम भिन्न थे।

इनके संकेत और दीक्षा संस्कार होते थे। इनमें सौदागर, स्कूल मास्टर और पादरी होते थे। सदस्य ईश्वर के नाम से शपथ लेते थे कि चाहे उनका दाहिना हाथ काट लिया जाये वे संस्था भेद न बतायेंगे और विरोधियों का रुधिर बहा देंगे। यदि कोई सदस्य संस्था का भेद बताता तो उसे प्राण-दंड दिया जाता। इसने ब्रिटिश सेनाओं को नष्ट करने और आयर्लैंड से अंग्रेज़ी सरकार को उखाड़ फेंकने का बीड़ा उठाया। दीक्षा संस्कार में पहचान के लिये निम्न प्रश्नोत्तर होते थे।

प्रश्न—आपकी छड़ी कितनी लम्बी है ?

उत्तर—इतनी काफी लम्बी है कि वह शत्रुओं तक पहुँच सकती है।

प्रश्न—यह किस शाखा की लकड़ी है ?

उत्तर—इसकी शाखा फ्रांस में है। यह अमरीका में फूलती है।

इसकी पत्तियां एरिन (आयरलैंड) के पुत्रों को शरण देंगी।

१८२६ में इस संस्था ने विशेष ज़ोर पकड़ा। १८३० में दमनकारी क़ानून बना। १८३१ से १८३५ तक आयरलैंड में अराजकता छाई रही।

आयरलैंड-दर्शन

१८४५ में आयरलैंड में भीषण दुर्भिक्ष पड़ा। आलू की फसल एकदम सड़ गई। फिर भी अंग्रेज़ ज़मीदारों ने बलपूर्वक किसानों से लगान वसूल किया। प्रायः इसी समय यंग आयरलैंडर और आयरिश रिपब्लिकन ब्रादरहुड संस्थाओं की स्थापना हुई।

आयरिशपब्लिकन ब्रादरहुड का ठीक ठीक आरम्भ १८५८ में हुआ। इसकी रचना एक चक्र या मंडल के आधार पर थी। सेना का केन्द्र ए या एक कर्नल होता था। वह ९ कप्तानों को चुनता था। प्रत्येक कप्तान नौ नौ सर्जेएट चुनते थे। प्रत्येक सर्जेन्ट नौ सिपाही चुनते थे। संस्था की बातों को गुप्त रखने के लिये प्रत्येक सदस्य ईश्वर को साक्षी मान कर शपथ लेता था कि जब तक मैं जीवित हूँ मैं प्रत्येक संकट झेल कर आयरलैंड की स्वाधीनता की रक्षा के लिये पूरा प्रयत्न करूंगा। अपने अफ़सरों की आज्ञा मानूँगा। ईश्वर मेरी सहायता करे।

फेनियन संस्था स्वाधीनता की पोषक और पादरियों के विरुद्ध थी। इन संस्थाओं को चलाने के लिये अमरीका से धन मिलता था। कुछ सदस्य स्वयं अमरीका

जाते थे। सूचना मिलने पर १८६५ में ब्रिटिश सरकार ने इन संस्थाओं के प्रमुख सदस्यों को दबा दिया।

१८६६ में क्लैन-ना-गायल नाम की संस्था बनी। वह आयरिश, अमरीकन संस्था थी। इसका यह उद्देश्य था कि शस्त्रों के ज़ोर से अंग्रेज़ी राज्यों को आयरलैंड में नष्ट कर दे। इसके सदस्य प्रधान के सामने शपथ लेते थे। लैंड लीग वास्तव में अमरीका की गुप्त संस्थाओं के आदेशों का पालन करती थी। वहीं से इसे धन मिलता था।

१९१७ में डी वेलरा की अध्यक्षता में सिनफीन दल की स्थापना हुई। जो लोग आयरलैंड में प्रजातन्त्र स्थापित करने के पक्ष में थे वे सब इसके सदस्य हो सकते थे। इस दल ने आयरलैन्ड की स्वाधीनता को अन्तर्राष्ट्रीय रूप दे दिया। वास्तव में सिनफीन सदस्यों की सहायता से आयरलैन्ड को स्वाधीनता प्राप्त करने में बड़ी सफलता मिली।

आयरलैंड-दर्शन

आयरलैंड की एक लोकप्रिय कहानी

टीर ना नोग (युवक देश) में एक राजा राज्य करता था। उसने बहुत वर्षों तक राज्य किया। लेकिन देश का नियम यह था कि हर सातवें वर्ष सब से अच्छे और तगड़े मनुष्य राज-पद के लिये दौड़ में सम्मिलित हों।

हर सातवें वर्ष, महल के सामने दौड़ने वाले एकत्रित होते थे और उस पहाड़ी की चोटी तक दौड़ लगाते थे जो दो मील दूर थी। पहाड़ी की चोटी पर एक कुरसी रक्खी रहती थी। जो मनुष्य दौड़ कर सर्व प्रथम इस कुरसी पर बैठ जाता वही अगले सात वर्ष तक राज्य करता था। जब टीर ना नोग का राजा बहुत समय तक राज्य कर चुका तो उसे डर लगने लगा कि कहीं कोई दूसरा मनुष्य पहाड़ी की चोटी वाली कुरसी पर न बैठ जाय और उसका सिंहासन छीन ले। इसलिये एक दिन राजा ने अपने ड्रूइड को बुलाया और उससे पूछा इस देश पर राज्य करने के लिये मैं कितने दिन कुरसी रक्खू ? क्या कोई मनुष्य दौड़ कर मुझसे पहले इस कुरसी पर बैठेगा और मेरे राजसिंहासन को छीन लेगा।

ड्रूइड ने उत्तर दिया कि अगर आपका दामाद (जामाता) आपके सिंहासन को न छीने तो आप सदा तक राज्य करते रहेंगे। राजा के कोई पुत्र न था। केवल एक लड़की थी जो देश भर में सर्व सुन्दरी थी। उसके समान एरिन या संसार के और किसी देश में सुन्दरी लड़की न थी। ड्रूइड की बात सुन कर राजा ने निश्चय किया था कि कोई मनुष्य मेरा दामाद (जामाता) न बन सके। उसने सोचा कि मैं अपनी लड़की को ऐसा कुरूप बना दूंगा कि संसार का कोई मनुष्य उससे विवाह न करेगा।

राजा ने ड्रूइड जादू का डंडा लेकर अपनी लड़की को अपने सामने बुलाया। जादू के डंडे से लड़की के सिर को छू कर राजा ने उसके सिर को सुअर के सिर में बदल दिया। फिर राजा ने लड़की को सुदूर के किले में भेज दिया। राजा ने ड्रूइड से कहा अब कोई मनुष्य इससे विवाह न करेगा। राजकुमारी के इस नये शूकर-मुख को देख कर ड्रूइड को बड़ा दुःख हुआ। उसने मन में कहा कि यदि मैं राजा को भेद न बताता तो बड़ा

अच्छा होता। कुछ समय के पश्चात ड्रूइड राजकुमारी से मिलने गया।

राजकुमारी ने ड्रूइड से पूछा कि क्या मैं सदा इसी रूप में बनी रहूंगी? ड्रूइड ने कहा यदि तुम एरिन में फिन मैक कुम्हेल के किसी एक लड़के से ब्याह कर लो तो तुम्हारा पुराना सुन्दर रूप हो जायगा। यह सुन कर राजकुमारी एरिन जाने के लिये अधीर हो गई। चलते चलते वह फिन के लड़के ओइसिन के पास पहुंची। ओइसिन को देख कर वह बड़ी प्रसन्न हुई। उन दिनों फिन के लड़के पहाड़ पर जंगलों में शिकार के लिये जाया करते थे। शिकार के जानवरों को ढोने के लिये वे अपने साथ पांच छः मनुष्यों को ले जाया करते थे। एक दिन ओइसिन मनुष्यों और कुत्तों को लेकर जंगल में शिकार करने के लिये गया कि उसके साथी पीछे रह गये। वे भूख और थकावट के मारे घर लौट आये। ओइसिन ने इतने जानवर मारे कि वह उन्हें अकेला नहीं ला सकता था। टीरना नोग की राजकुमारी इस दिन लगातार ओइसिन के पीछे पीछे चलती रही। जब ओइसिन के साथी छोड़ कर चले गये तो राजकुमारी मरे जानवरों

के ढेर के सामने आकर खड़ी हो गई। उसे देख ओइ-
सिन ने कहा जिन जानवरों को मैंने इतने कष्ट से मारा
है उन्हें मैं यहां नहीं छोड़ना चाहता। राजकुमारी ने
कहा कुछ जानवर अलग बांध दीजिये उन्हें मैं आप के
लिये ले चलूँगी। इससे आपका बोझ हलका हो जायगा।
जानवरों को लाद कर दोनों चलने लगे। भारी बोझ
से थक कर दोनों एक पत्थर के सहारे बोझा डाल कर
विश्राम करने के लिये बैठ गये। इस सन्ध्या को गरमी
अधिक थी। राजकुमारी का पसीने से दम फूल गया
था। उसने पसीना सुखाने के लिये कपड़े खोल लिये।
उसके गोरे रंग और सुन्दर छाती देख कर ओइसिन ने
कहा आपका शरीर तो ऐसा सुन्दर है कि मैंने अपने जीवन
में किसी स्त्री का इतना सुन्दर शरीर नहीं देखा। यह बड़े
खेद की बात है कि आपका मुख शूकर का है। राज-
कुमारी ने अपनी सब कहानी सुनाई कि मैं देश भर में
सर्व सुन्दरी थी। मेरे पिता ने ड्रूइड जादू से मेरे सिर को
बदल दिया। लेकिन ड्रूइड जादूगर ने मुझे बताया है कि
यदि मैं, फिन के किसी लड़के से ब्याह कर लूँ तो मेरा
पहला रूप मुझे फिर मिल जायगा। इसी उद्देश्य से मैं

आपका अनुसरण कर रही हूँ कि आप मुझसे ब्याह कर लें और मुझे जादू से मुक्त कर लें। ओइसिन ने कहा यदि ऐसा है तो मैं आपके ऊपर सुअर का सिर न रहने दूंगा। उन्होंने शिकार को भी नहीं उठाया और घर आने के पहले ही उसी स्थान पर उन दोनों ने तुरन्त ब्याह कर लिया। राजकुमारी के सिर से सुअर का चेहरा दूर हो गया और उसके स्थान पर उसका पहला सुन्दर मुख हो गया।

राजकुमारी ने ओइसिन से कहा अब मैं यहां अधिक नहीं ठहर सकती। यदि आप मेरे साथ टीरनानोग न आवेंगे तो हम दोनों अलग हो जायंगे। ओइसिन ने कहा जहां आप जायंगी वहीं मैं चलूंगा।

वे दोनों उसी स्थान से चल दिये। ओइसिन अपने घर पर अपने पिता से भी मिलने नहीं गया। राज-कुमारी अपने पति के साथ लगातार चलती रही। अन्त में वह अपने पिता के क़िले के सामने आ पहुँची। उन दोनों का स्वागत हुआ क्योंकि राजा समझता था कि उसकी लड़की खो गई है। उसी वर्ष राजा का चुनाव होने वाला था। जब निश्चित दिन आया तो सब बड़े

बड़े लोग और दौड़ने वाले राजमहल के सामने इकट्ठे हुये। राजा भी उतरा। दौड़ आरम्भ हुई। दूसरे लोग आधी दूर भी न पहुंच पाये थे कि इतने में ओइसिन पहाड़ी चोटी पर पहुंच कर कुरसी पर बैठ गया। इसके बाद किसी ने ओइसिन के सामने कभी दौड़ने का साहस न किया। वह बहुत दिनों तक राज्य करता रहा। ओइ-सिन और राजकुमारी के दिन बड़े सुख से बीते। ओइ-सिन वहां ३०० वर्ष रहा लेकिन वह समझता था कि अभी उसे आये केवल वहां ३ वर्ष हुये हैं। अन्त में एक दिन ओइसिन ने अपनी रानी से कहा मैं अपने पिता और एरिन के लोगों को देखना चाहता हूं। राजकुमारी ने कहा अगर आप यहां से जायंगे और एरिन की भूमि पर पग रक्खेंगे तो अन्धे और बूढ़े हो जायेंगे और यहां कभी न आ सकेंगे। यदि आप जाना ही चाहते हैं तो मैं आप को एक घोड़ा दूंगी। आप इस पर चढ़ कर देख आवें। लेकिन अगर आप इस घोड़े की पीठ से उतर कर एरिन की भूमि पर पैर रक्खेंगे तो यह घोड़ा तुरन्त लौट आयेगा और आप दीन वृद्ध और अन्धे होकर वहीं रह जायंगे। ओइसिन ने कहा आप न डरें। मैं एक बार

अपने पिता और मित्रों को देख कर तुरन्त लौट आऊंगा। राजकुमारी ने सफेद घोड़ा सजा कर ओइसिन को दिया और कहा आप जहां कहीं जाना चाहेंगे यह घोड़ा आप को वहां ले जायगा।

ओइसिन घोड़े पर सवार होकर बिना रुके एरिन पहुँचा। वह मन्स्टर में नाकपैट्रिक के पास पहुंचा। यहां एक ग्वाला खेत में गायें चरा रहा था। जहां गायें चरती थीं। वहीं एक चौड़ा चपटा पत्थर पड़ा था। ओइसिन ने ग्वाले से कहा भाई इस पत्थर को उलट दो। ग्वाला बोला यह पत्थर तो २० मनुष्यों से भी न उठेगा। तब ओइसिन ने घोड़े को पत्थर के पास ले जाकर नीचे बढ़ाया और घोड़े पर चढ़े चढ़े ही पत्थर को उलट दिया। इस पत्थर के नीचे शंख के समान बजने वाला एक बड़ा सींग रक्खा था। यह नियम था कि इस सींग को जब कोई फेनियन बजाता तो दूसरे फेनियन लोग जहां कहीं होते इसका शब्द सुन कर इकट्ठे हो जाते। ओइसिन ने ग्वाले से सींग उठाने के लिये कहा लेकिन वह इतना भारी था कि उस ग्वाले जैसे कई मनुष्यों से नहीं उठ सकता था। अतः ओइसिन ने घोड़े से झुक

कर उस सींग को उठाया। वह सींग बजाने के लिये इतना आतुर हो गया कि उसे कुछ ध्यान न रहा और उसका एक पांव भूमि से छू गया। पैर से भूमि छूते ही घोड़ा वहां से चला गया और ओइसिन एक वृद्ध और अन्धा मनुष्य बन गया।

यह घटना देख ग्वाला अचम्भे में हो गया और उसने दौड़ कर यह सब कथा सेण्ट पैट्रिक को सुनाई।

सेण्ट पैट्रिक ने एक घोड़ा और एक मनुष्य को भेज कर ओइसिन को अपने पास बुलवा लिया। सेण्ट पैट्रिक ने अपने रसोइये को आज्ञा दी कि वह ओइसिन को भर पेट रोटी, मक्खन, मांस और शराब दिया करे। एक लड़का ओइसिन की सदा देख भाल करने के लिये कर दिया। इस तरह ओइसिन वहीं रहने लगा। ओइसिन ने अपने पिता फिन मैककुन्हेल और दूसरे लोगों को पुरानी बातें सुनाई और कहा कि किस प्रकार भोजन, युद्ध और शिकार किया करते थे और जादू के असर से मुक्त होते थे।

सेण्ट पैट्रिक इस समय एक बड़ा घर बनवा रहा था। लेकिन पैट्रिक के मनुष्य जो कुछ दिन में बनाते थे

उसे कोई रात में गिरा देता था। पैट्रिक बड़ा हैरान था। ओइसिन ने कहा यदि मुझे अपनी पुरानी शक्ति मिल जावे तो मैं ढाने वाले को रोक दूँ। सेण्ट पैट्रिक ने ईश्वर से प्रार्थना की और ओइसिन को फिर अपनी पहली दृष्टि और शक्ति मिल गई। ओइसिन रात में पहरा देने लगा। इतने में कोई सांड़ के रूप में आया। ओइसिन और साड़ में भयानक युद्ध हुआ। अन्त में साँड़ मारा गया। ओइसिन भी अपना काम पूरा कर के सो गया। सेण्ट पैट्रिक ने पता लगाने के लिये एक दूत भेजा। दूत ने लौट कर बतलाया किस प्रकार युद्ध में भूमि कहीं पहाड़ी और कहीं घाटी के रूप में बन गई फिर भी ओइसिन विजयी हुआ। यह सुन कर सेण्ट पैट्रिक ने सोचा कि कभी क्रोध में आकर ओइसिन हम सब को न मार डाले। इसलिये सेण्ट पैट्रिक ने फिर ओइसिन को दुर्बल, वृद्ध और अन्धा बना दिया। इसी दशा में जागने पर आइसिन दूत के साथ घर आया और रहने लगा।

सेण्ट पैट्रिक के पड़ोस में एक धनी लेकिन कंजूस यहूदी रहता था। एक दिन उसने सेण्ट पैट्रिक से कहा कि आपके घर की सहायता के लिये मैं यह सब अन्न

दे दूँगा जो एक मनुष्य इस तृणराशि से कूट कर निकाल सके। ओइसिन ने कहा कि यदि मुझे पहली शक्ति मिल जावे तो मैं इतना अन्न साफ कर लूँगा जो घर वालों के लिये एक वर्ष तक पर्याप्त हो। सेण्ट पैट्रिक ने फिर ईश्वर से प्रार्थना की। ओइसिन को दृष्टि और शक्ति फिर मिल गई। ओइसिन ने गेहूँ के पुरों से गेहूँ इतनी तेज़ी से अलग किया कि सन्ध्या होने से पूर्व पैर का सब गेहूं साफ कर दिया। यहूदी शोक से पागल हो गया। सेण्ट पैट्रिक को ओइसिन की शक्ति देख कर डर लगने लगा। ओइसिन की शक्ति और दृष्टि फिर छिन गई। सेण्ट पैट्रिक के मनुष्य गेहूं ढोने में लग गये। लेकिन गेहूँ इतना अधिक था कि वे सब मिल कर आधा भी न ढो सके।

---

0 - १ मनुष्य प्रति वर्ग मील
१ - ५०
५० - १००
१०० - २५०
२५० - ४००
४०० से अधिक
डोनेगल की खाड़ी
अचिल द्वीप
डंडाक की खाड़ी
आयरिश सागर
डबलिन
विकलोहेड
कार्नसोर अन्तरीप
कार्क बन्दरगाह
क्लियर अन्तरीप
डिंगल की खाड़ी
गाल्वे
री झील
डर्ग झील
लिमेरिक
आयरलैंड-की जनसंख्या की सघनता